Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 18 अंक 11 30 नवम्बर, 2018 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

दीन के बंधु किसान के मसीहा - छोटू राम

137वें जन्मदिवस पर विशेष

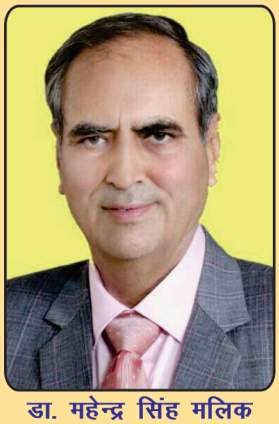

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

दीन बंधु चौधरी छोटू राम का सफर सदा ऊंचे पहड़ों तथा गहरी खाईयों की तरह मुश्किलों से भरा रहा लेकिन उनका लक्ष्य, किरदार और अकीदे पर सदा अडिग रहा

असफलताओं, मुश्किलों से मत घबरा मेरे दोस्त। गुच्छे की आखिरी ताली भी ताला खोल सकती है॥

इन्होने इस वाक्य को बार-बार सिद्ध कर दिखाया, कभी डरे नहीं और जब जो ठाना, मंजिल की ओर अपनी धुन में अग्रसर रहे। अपने समाचार पत्र 'जाट गजट' में 1916 में गुड़गावां के डिप्टी कमीश्नर के विरूद्ध छापे लेख के लिए अंग्रेंज अफसर ने 'देश निकालो' के आदेश दे दिए, वहीं उसी सरकार ने 1927 में राय बहादुर का खिताब दिया और 1937 में सर छोटू राम की उपाधी से विभूषित हुए। वर्ष 1920 में गांधी जी द्वारा आंदोलन वापसी से रूष्ट होकर कांग्रेस से नाता तोड़ा व 1923 में युनिनिस्ट पार्टी का गठन किया। जमींदारा लीग के बैनर तले फजल हुसैन के साथ मिलकर प्रचार-प्रसार किया और वर्ष 1937 में युनिनिस्ट पार्टी पंजाब में जीती और यहां उनका डोगरी बैल्ट से विशेष स्नेह जग जाहिर हुआ। डोगरा क्षेत्र के सर सिंकदर हयात खान को मुख्यमंत्री बनवा खुद राजस्व मंत्री बने। वर्ष 1938 में मार्केटिंग बोर्ड का गठन किया ताकि किसान को उसकी उपज का वाजिब दाम मिल सके। यह बोर्ड आज पूरे देश में विद्यमान है। किसान सदा सर छोटू राम का ऋणी रहेगा।

वर्ष 1903 में हिसार के दानवीर छाज्जू राम से सहायता प्राप्त आगरे से वकालत की पढ़ाई करने वाले छोटू राम पर उनकी अमिट छाप बरकरार रही। अपनी आमदन का एक तिहाई पैसा जरूरतमंद विद्यार्थियों की शिक्षा हेतू फंड स्थपित कर दिया जिसका सुखद परिणाम जग जाहिर है। पाकिस्तान के एक मात्र नोबेल पुरूष्कार विजेता अब्दुस कलाम ने जीतने पर स्वीकारा और कहा कि वे इस मुकाम पर कैसे पहुंचे तो जबाब दिया कि अगर छोटू राम ना होता तो अब्दुस कलाम कभी इस मुकाम पर ना होता।

कर्ज मुक्ति अधिनियम तथा पशुओं की निलामी पर रोक, उन्होने वर्ष 1935 में ही पास करवा दिए थे। उनके विरूद्ध मुजाहरे हुए-तबके साहूकारों के परिवारों की ओर से जगह-जगह आंदोलन करवाए तथा 'ऐ कि हौया, छोटू मौया' तक के नारे लगे लेकिन वे अपने अकीदे पर कायम रहे और इसे लागू करवाकर ही माने। गिरवी रखी जमीनें वर्ष 1938 में ही मुक्त करवा दी गई तथा 20 वर्ष पूर्ण होने पर स्वतः भूमि मालिक को बिना कुछ अतिरिक्त भुगतान वापिस दिलवाने का अधिनियम ही बनवा दिया। उन्होने वर्ष 1940 में एक और महत्वपूर्ण अधिनियम पारित करवाया जिसमें 'बाल मजदूरी' पर रोक लगाई गई। इस अधिनियम अनुसार 14 वर्ष के कम आयु के बच्चे से मजदूरी नहीं करवाई जा सकती तथा कार्यसीमा भी 11 घंटे अधिकतम सीमित करवा दिए।

हर किसान के खेत को पानी मिले इसके लिए भाखड़ा डेम परियोजना पारित भी करवाई और महाराजा बिलासपुर को लेक में आने वाली भूमि छोड़ने हेतू भी रजामंद कर दिखाया जो उनके ही बूते की बात थी।

डोगरा क्षेत्र में रावी-ब्यास की बात भी उन्होने की लेकिन भाखड़ा परियोजना के पूरा होने के सपने से पूर्व ही 1945 में चिरनिंद्रा लाहौर में सो गए।

शेष पेज 2 पर

’k"k i`"B &1

वे किसान के हितों में सदा रहे और अंग्रेजों का विरोध किया तथा यहां तक कह गए – ‘‘जिस खेत से म्यंसर ना हो दो जून की रोटी, उस खेत के गोछा-ए-गंदम को जला दो।’’ इसमें उनके दिल में किसान की बदहाली के लिए रूदन है तथा उसकी बहबूदगी हेतू किसान को फौज में भर्ती होने की सलाह दी और 22000 जवान अंग्रेज सेना में भर्ती करवाए ताकि उनको भी जीवन यापन के साधन उपलब्ध हो सके तथा किसान के बच्चे पढ़ लिख सकें – ‘भर्ती हो जो रे रंगरूट, यहां मिलै तन्ने टूटे जूते, उड़ै मिलेगें बूट।’ ऐसी तलख बात शायद छोटू राम के इलावा कोई दूसरा नहीं कह सकता था। उन्होने अपना जन्म दिवस भी कृषि से जोड़कर बसंत पंचमी को मनाने को कहा। कवि सूरदास जी की ये पंक्तियां उन पर स्टीक बैठती हैं – ‘जननी जनै तो भगत जन, या दाता या शूर, नहीं तो जननी बांझ रहे, काहे गवाए नूर।’

दीन बंधु का जन्म 24 नवंबर 1881 को रोहतक के गढ़ी सांपला में हुआ। किसान सदा गर्ज, मर्ज तथा कर्ज के आकंठ में डूबा रहता है और यही उनके पिता जी के साथ भी हुआ। गांव के ही साहूकार द्वारा उनकी बेईज्जती उनके बालमन पर अमिट छाप छोड़ गई और रिछपाल से छोटू बने बच्चे का संकल्प परवान चढ़ा और वह दीन बंधु, किसान मसीहा, राय बहादुर तथा सर छोटू राम की सीढ़ीयां चढ़ते हुए इतिहास के सुनहरी पन्नों में अपना नाम दर्ज करवा गया।

सर छोटू राम का सफर इतना आसान नहीं था। एक मध्यम किसान परिवार में जन्मे बच्चे के दिल में एक साहूकार से पिता को बे-इज्जत होते देख जो भावना पैदा हुई वह प्रतिशोध नहीं कुछ कर गुजरने की ललक थी। वह छोटा सा हादसा ही उनका पथ प्रदर्शक बन गया और काश्तकार-गरीब वर्ग मसीहा बनकर उबरे। अपनी सख्त मेहनत और बुद्धि की बदौलत सैंट स्टीफन कालेज दिल्ली से स्नात्तक की डिग्री हासिल की। संपूर्ण विद्यार्थी जीवन स्नात्तक और कानून स्नात्तक तक की डिग्री सदा प्रथम श्रेणी में हासिल कर वजीफे पर ही पूर्ण की जो उनकी बौद्धिकता का प्रतीक और प्रमाणिक है।

सर छोटू राम ने देश को सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद जैसी कुरीतयों से निजात दिलाने के लिए और करोड़ों किसान, मजदूरों को आर्थिक शोषण से मुक्ति दिलाने के लिए वकालत का पेशा छोड़ राजनीति को अपना लिया। वे वर्ष 1916 में रोहतक जिले के कांग्रेस अध्यक्ष बने लेकिन केवल चार वर्षों बाद ही 1920 में कांग्रेस के असहयोग आंदोलन से अपना असहमति जताते हुए जिला कांग्रेस अध्यक्ष पद त्याग दिया।

सर छोटू राम हिंदू-मुस्लिम एकता के पक्षधर थे। मुस्लिम लीग पंजाब में युनिनिस्ट पार्टी को खत्म करने के लिए प्रयास करती रही और देश विरोधी ताकतों को मजहब के नाम पर बांटने की कोशिश करती रही। वर्ष 1944 में उन्होने मुस्लिम बाहुल क्षेत्र लायलपुर अब फैसलाबाद में मुल्लाओं और डिप्टी कमीश्नर के विरोध के बावजूद एक बड़ी रैली करने में सफलता हासिल की। इस रैली में 50,000 के करीब लोगों ने हिस्सा लिया। सर छोटू राम उस वक्त तो इसे टाल गए लेकिन राष्ट्र विरोधी ताकते एक अलग इस्लामिक देश – पाकिस्तान के गठन में कामयाब हो गई और राष्ट्र का विभाजन 1947 में हो गया। राष्ट्रभक्तों का मानना है कि अगर सर छोटू राम जिंदा रहता तो राष्ट्र का बंटवारा न होता। चौधरी साहब बहुत ही स्पष्ट शब्दों में कहते थे ‘‘हम मौत पंसद करते हैं, विभाजन नहीं।’’ सर छोटूराम की चौमुखी प्रतिभा को हमें आज के संदर्भ में देखना-समझना है। जब तक उनकी विचारधारा युवा वर्ग में पूर्णतया जागृत नहीं होगी तब तक उनकी ग्रामीण क्रांति या महात्मा गांधी का पूर्ण स्वराज भारत में नहीं आ सकता। लेखक ने कई बार वर्तमान पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ जो कि उस समय लाहौर में

एकता का किला सबसे सुरक्षित होता है। न वह टूटता है और न उसमें रहने वाला कभी दुखी होता है। – अज्ञात

स्थित थी, के अंदर सर छोटूराम चेयर स्थापित करने के लिए प्रदेश सरकार व प्रशासन को पत्र लिखे हैं ताकि किसानी पर आधुनिक तकनीक के शोध हों जो किसानों की दशा सुधारने में कारगर हो सकें लेकिन अभी तक इस विषय में कुछ नहीं किया गया है। आज दीन बंधु सर छोटू राम द्वारा किसान, मजदूर वर्ग के उत्थान के लिए किए गए कार्यों को तीव्र गति से चलाए जाने की आवश्यकता है ताकि ग्राम स्वराज का लक्ष्य पूरा हो सके। दीनबंधु ऐसे ही युग पुरूष थे जिन्होने हरित क्रांति का सुत्रपात कर आधुनिक चेतना के सुत्राधार बने।

राष्ट्रीय परियोजनाओं में भाखड़ा नंगल डैम की प्रस्तावना का स्वरूप और उसका क्रियान्वयन चौधरी छोटूराम की सबसे बड़ी देन है। उन्होने 1929 में इस दिशा में चिंतन आरंभ किया तथा अपनी मृत्यु की पूर्वसंध्या 8 जनवरी 1945 को इस महायोजना के पूर्ण प्रारूप पर स्वर्णिम हस्ताक्षर किए थे। चौधरी साहब के आकस्मिक देहांत के बाद ही पंजाब में मुस्लिम लीग पैर जमा सकी और तभी भारत विभाजन का मार्ग प्रस्त हुआ। दीन बंधु के जीते जी मोहम्मद अली जिन्नाह का देश विभाजन पाकिस्तान का महत्वाकांक्षी सपना साकार ना हो सका।

आज के कृषक मजदूर वर्ग को सही दिशा दिखाने, शिक्षित करने, इस वर्ग के उत्थान के लिए नई तजवीज व प्रगतिशील योजनाएं बनाकर उनको प्रभावी ढंग से लागू करने, निरंतर बढ़ती कीमतों पर अंकुश लगाकर किसान की मूलभूत जरूरत बिजली-पानी का प्रबंध आदि सुचारू रूप से करने की आवश्यकता है तभी किसान-मजदूर के मसीहा-रहबरे आजम दीन बंधु सर छोटू राम का ग्रामीण समाज, कृषक मजदूर वर्ग के विकास का सपना पूरा हो सकता है अन्यथा किसान की कोई सुध लेने वाला नहीं। अब जनता की रक्षक सरकार स्वंय ही भक्षक बन चुकी है।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0(सेवा निवृत)
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

चौधरी छोटूराम की पहली विशाल रैली

– सुरजभान दहिया,

सन 1935 के इंडिया एक्ट शासन–सुधारों के अंतर्गत सन 1937 में अंसेम्बली के चुनाव होने के बाद चौ. छोटूराम की यूनियनिस्ट पार्टी की पंजाब में सरकार वनी। इस सरकार में चौ. छोटूराम वजीर बने। इस सरकार ने बिना किसी देर के वे कानून बना दिये जिनका ड्राफट चौ. छोटूराम ने पहले ही तैयार कर रखा था। ये कानून सभी किसान कल्याणकारी थे जिनसे पंजाब के किसान शोषण मुफत हो गये। इन कानूनो पर तीखी प्रतिक्रिया देते हुये ता. मुकन्दलाल पुरी ने कहा–' दुर्भागयवश चौ. छोटूराम के प्रभाव से सारे ही कानून ऐसे बन गये हैं जो हमारा सर्वनाश करने वाले है।' डा. सर गोकलचंद नारंग कहने लगे– 'ये कानून नहीं बल्कि हमारे लिये तो मारकूट कानून बन गये हैं।' पंजाब के देहाती लोग इन्हें –'सुनहरे कानून' के नाम से संबोधि त करके अपनी प्रसन्ता व्यक्त करते थे और शहरी लोग इन्हें 'काले कानून' कहकर अपना रोश प्रकट करते थे। चौ. छोटूराम कहते थे– 'ये कोई कानून नहीं हैं परंतु लोगों को रोजी रोटी कमाने के लिए सही रास्ते दिखाने के दिशा–निर्देश हैं, ठगी व शोषण से बचने की एक सामाजिक व्यवस्था हैं।'

इन कानूनी सामाजिक प्रबंधन से पंजाब से शांतिपूर्ण क्रांति का श्रीगणेश हुआ तथा पंजाब स्वर्ण युग में संकट मोचनहार बने। इसलिये लाखों कंठो से उन्हें 'दीनबंधु' कहकर पुकारा जाने लगा। वे एक राजनीतिक भूमिका की बजाय एक समाज सुधारक की भूमिका में दिखाई दिये जिससे वे नवयुव प्रवृतक बन गये। पंजाब के मिनिस्टर रहते हुये उन्होंने समाज उत्थान हेतु जो कदम उठाये उससे पंजाब में जहां धूल उड़ती थी, वहां हरे–भरे खेत लहलहा उठे, जिन्हें दो जून की रोटी नहीं मिलती थी, वे भरपेट खाना खाने लग गये और जो वर्ग दबा–कुचला था, वह खुशी की सांस लेने लगा। सारे भारत में पंजाब गेहूं का 'वेयरहाउस' बन गया। गन्ना, कपास जैसे कैशक्रकोप उगाकर किसानों के चेहरो पर रौनक आ गई। किसान अपनी पैदावार का खुद मालिक हो गया तथा सपंन्नता की ओर अग्रसर हो गया। इससे पंजाब मं अनेक प्रगति अवरोध क खत्म हो गये। पंजाब में जो ब्याज के कारखाने चल रहे थे। वे बंद हो गये, कानी डाण्डी व खोटे बाट की तिजारत पर विराम लग गया। पंजाब का किसान आर्थिक गुलामी से निजात पाकर खुद सरकार का हिस्सा बन गया। पंजाब में इ बदलते मिजाज ने साहूकारों, सूदखोरों व शहरी संपन्न लोगों की नींद

किताबें ऐसी शिक्षक हैं जो बिना कष्ट दिए, बिना आलोचना किए और बिना परीक्षा लिए हमें शिक्षा देती हैं। – अज्ञात

उड़ा दी। वे इस क्रांति कारक परिवर्तन के महानायक चौ. छोटूराम के प्रति आग बबूला हो गये।

हताश शहरी असेम्बली के मेम्बरों ने यूनियनिस्ट पार्टी की सरकार के विरूद्ध अविश्वास प्रस्ताव असेम्बली में पेश कर दिया। यह अविश्वास प्रस्ताव 112 के मुकाबले 45 मतों से गिर गया परंतु इस अविश्वास प्रस्ताव के बाद प्रधानमंत्री सर सिकन्दर हयात खां. कुछ घबरा गये थे। उनकी घबराहट के दो कारण थे–एक तो निरंतर बढ़ता हुआ विरोध और दूसरा अंग्रेज गवर्नर के रूख में परिवर्तन। इसलिए उन्होंने अपने मंत्री मंडल की आपातकालीन बैठक बुलाई। उन्होंने चौधरी छोटूराम से कहा कि यह उचित होगा कि आप अपने किसान प्रेम और पिछड़े वर्गो की खुशहाली की भावनाओं को जरा ढ़ीली कर दें वरना यूनियनिस्ट पार्टी की सरकार ज्यादा देर तक पंजाब में नही चल पायेगी क्योंकि ब्रिटिश सरकार भी आपके क्रांतिक्रमों कार्यक्रमों से खुश नहीं है। इस पर अन्य मंत्रियों ने भी अपनी सहमति व्यक्त कर दी।

चौ. छोटूराम ने बड़ी दृढ़ता के साथ प्रधानमंत्री को कहा– जो 'आपका मंत्रीमंडल न तो गर्वनर का वरदान है और न ही शहरी पढ़े–लिखे लोगों का जो धनी हैं व चतुर भी। आपके मंत्रीमंडल बनाने की शक्ति उन्हीं लोगों से मिली है जो कि दीन, गरीब, अनपढ़ व पिछड़े हैं और गांववासी हैं। सर सिकंदर चौधरी साहब के इस जवाब से कुद प्रभावित तो हुये किंतु उन्होंने कहा कि जनता के जिस बहुमत की चट्टान पर हमारी कुर्सियां टिकी समझते हैं, इसमें ब्रिटिश सरकार की भी तो मेहरबानी है।

सर सिकंदर को चितिंत हुये देखकर चौधरी साहब थोड़ा सा मुस्कराते हुये बोले–वजीरे आजम! वे दिन लद गये जबकि ब्रिटिश अफसर सरकार पर हावी होते थे। जनता की सहानुभूति को न गवर्नर कम कर सकता है न वायसराय। आपकी जो जनता में प्रतिष्ठा है, एसे देखने के लिये आपने कभी अवसर नहीं निकाला। मैं कांफ्रैसों का आयोजन करता हूँ, आप उनमें चलकर देखें। कांफ्रेसों का नाम सुनकर का नाम सुनकर सर सिकंदर चौंके और बोल–खुदा के लिए कांफ्रेस मत कराईये। हिन्दू सभा और कांग्रेस वालों ने हमें बहुत बदनाम कर रखा है। हमारी कांफ्रेसों में उल्लू ही बोलगे। चौधरी साहब बड़े उत्साह से बोले–चलों मैं एक सभा हरियाणा क्षेत्र में कराता हूँ। आपके ख्याल के अनुसार अगर हाजिरी कम भी हुई तो उसमें आपकी कोई बदनामी नहीं होगी क्योंकि आप कह सकेगे कि वह हिन्दू बाहुल इलाका है और हिन्दू इलाके में जाने का उन्हें कभी मौका नहीं मिला। सर सिकंदर तथा अन्य मंत्रीगण इस बात पर सहमत हो गये।

चौधरी छोटूराम ने अपनी पहली यूनियनिस्ट पार्टी की सरकार की जनसभा सोनीपत में आयोजित करने की घोषणा कर दी। इस जनसभा की सूचना प्रत्येक गांव में बड़ी तेजी से पहुंच गई। लोगों में जनसभा के प्रति नया उल्लास जागृत हो गया। हुक्के पर बैठकों का मुख्य बातचीत का मुद्दा चौ. छोटूराम की सोनीपत रैली का बन गया। सारे हरियाणा क्षेत्र में जोश का माहौल था – कहां सिरसा, कहां नारनौल, कहां कैथल, कहां अम्बाला सभी जगह – 'चलो सोनीपत चौधरी के रैली में' का वातावरण तैयार हो गया। रैली के उद्घोष से गांव–गांव में ज्वर सा प्रवाहित हो गया था, एक नया उत्साह था कि चौधरी ने बुलाया है। पनघट पर आते–जाते महिलाओं के गीतों ने वातावरण में नई उमंग भर दी थी। एक ऐतिहासिक गीत का उल्लेख है – "छोटूराम व वजीर की पंचायत का बुलावा आया रे 'मां' गाम–गाम में, 'सनपत' में बिछेगी चारड़ लार में। कठ्ठे होंगे छतीस बिरादरी के लोग हरहाल में, चाल्यागें सिगांर कै सारे चौधरी के मान में। सासंद सुसर भी तैयार में, बेरा मैंने इसका दिया 'भाण' आपणे पीहर में।"

मैं 1965 से 1968 तक छोटूराम आयै कॉलेज, सोनीपत का छात्र था। पुराने रोहतक बस स्टैण्ड से सटी मनसाराम भजनी ी कपड़े की दुकान थी। वे आर्य समाज एवं चौधरी छोटूराम विचाराधारा के प्रचारक रहे थे। उन्होंने चौधरी छोटूराम के बारे में जानकारी देते समय उपरोक्त गीत की पक्तियां हमें लिखवाई थी।

उक्त किसान रैली के लिये हरगांव में लोगों ने पहले से ही जाने तैयारी कर ली थी। जिसके पास तगड़े बैंलों की जोड़ी थी। उसन अपनी बैलगाड़ी ललेकर सोनीपत के लिए चल पड़े थे। रात के विश्राम के लिए जिस गांव में रूकते, वहां उनका घी–बूरा परासकर अतिथि–सत्कार किया जाता था। गांव–गांव में चौकीदारों ने रैली की मुनादी कर दी थी।

जमना पार यानी पश्चिमी उत्तर–प्रदेश के किसानों में रैली में शामिल होने का बड़ा चाव था। बागपत में नई नौका बनावा कर जमना के कांठे पर सजा रखी थी। इधर मुरथल, बहालगढ़ नाहर, खेवड़ा के बड़े–बड़े जमींदारों ने उनके स्वागत व खाने–पीने की तैयारी कर ली थी। रैली तक उन्हें ले जाने के लिए बैलगाड़ी, रथ, मंझोली तैयार खड़ी थी। जगह–जगह खाप पंचायतों की इस रैली में शामिल होने के लिए बैठकें हो चुकी थी। दिल्ली से सटे गांवों बुआना, कंझावला, पूठ–कराला, नांगलोई, पालम आदि बड़े गावों से बैलगाड़ियों की लार, बैलों के घूंघरों की आवाज रात में सोते लोगों के कानों में सून रही थी। गाड़ी के पीछे हांड़ी में आग सुलग रही थी? हुकटी की गुड़गुड़ाहट के साथ काफला सोनीपत की ओर बड़ रहा था।

सोनीपत में चौ. टीकाराम व चौ. शादीलाल वकील की कोठियों पर संतर्क कार्यालय बना रखे थे। यहां पर कुछ घुड़ सवार तैनात थे जो संदेश वाहक की भूमिका में रहते थे। रैली से पूर्व रोज की सूचना प्रत्येक गांव से घुड़सवारों द्वारा यहा दर्ज करवाई जाती थी। रैली की पूरी तैयारी करने का दायित्व चौ. टीकारा को सौंपा गया था। सोनीपत के आस–पास के सभी

गांवों में एक चौधर एक संपर्क सूत्र का दायित्व निभा रहा था।

रैली के दिन से पहले ही सोनीप के नजदीक लोग अपने रिश्तेदारियों में जाकर रुकने लग गये थे। बैलगाड़ियों की लार, घुड़सवारों की टकटक, रेलगाड़ियों में भीड़, बसों में सवारियों का उल्लास, पैदल चलने वालों का काफला चारों तरफ एक जुनून को इंगित करता सोनीपत की ओर चल रहा था। अपने किसान मसीहा चौधरी छोटूराम के प्रति समर्पणता का यह एक अद्वितीय दृश्य था। सोनीपत के जटवाड़े में रैली से कई दिन पहले से ही दिवाली का माहौल था।

रैली के निर्धारित दिवस में सोनीपत के आकाश के नीचे एक और आकाश बन गया था – पगड़ियों का आकाश–रंग बिरंगी पगड़ियां रैली मैदान को जो सोनीपत रेलवे स्टेशन के पास था, को सुशोभित कर रही थी। ऊंची सजी हुई स्टेज पर जब वजीरे–आजम सर सिकंदर हयात खां एवं उसके मंत्री साथी इतनी बड़ी भीड़ को देखकर प्रसन्न मुद्रा में अति प्रभावित नजर आ रहे थे तथा कौी समय तक अपार जनसमूह का अभिनन्नदन स्वीकार करते रहे। स्टेज सेक्रेटरी चौ. टीकाराम ने चौ. छोटूराम तथा सर सिकंदर हयात खां को एक साथ स्टेज पर बुलाकर लोगों के भावात्मक अभिनन्दन को उन्हेंने हाथ जोड़ कर स्वीकार किया, तत्पश्चात् जनसभा की कार्यवाही प्रारम्भ हुई।

एक लाख से ऊपर की जनसभा को चौ. छोटूराम ने संबोधित करते हुये कहा – पंजाब में तीन साल से यूनियनिस्ट पार्टी की सरकार है जिसे आप भाई जमींदारा सरकार कहते हैं। निःसन्देह यह किसानों की सरकार है, उपेक्षित वर्ग की सरकार हैं, शोषित वर्ग की सरकार है, पिछड़ों की सरकार है। अतः अब तो तुम्हें अभिमान होना चाहिये कि पंजाब में तुम्हारी सरकार है। यह तुम्हारे हित के लिये प्रतिज्ञाबद्ध है। तुमने ही उसे बनाया है और तुममें से तुम्हारे भाई ही इसे चला रहे हैं। इस सरकार ने तुम्हारें कष्ट निवारण के लिये थोड़े ही समय में जो कानून बनाये हैं तथा तुम्हें उन कानूनों ने जो राहत दिलवाई है इससे कुछ लोग परेशान हैं। पिछले असेम्बली के इजलाश में विरोधी पार्टियों ने हमारे मंत्रीमंडल के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव भी लाया पर वह गिर गया, गिरना ही था क्योंकि यूनियनिस्ट पार्टी के मेम्बर विरोधी पार्टियों की गतिविधियों पर पैनी नजर रखते हैं। हम कुछ और कल्याणकारी स्कीमें बनाने जा रहे हैं ताकि देहात में भी वहीं सुविधाएं मिले जो आज तक सिर्फ शहरों तक सीमित रही हैं। जल्द ही इन पर कार्य होगा।

इसके पश्चात् स्टेज पर वजीरे आजम सर सिकन्दर हयात खां आये, करतल ध्वनी से पुनः उनका स्वागत हुआ। उन्होंने अपने संबोधन करने से पूर्व चौधरी छोटूराम की ओर देखा और अपनी भावना व्यक्त करजे हुये कहा–हरियाणा की पाक जमीं पर मैं चौधरी छोटूराम के आर्शीवाद से पंजाब के वजीरे आजम की हैसियत से आप के सामने खड़ा हुआ हूं और आप के प्यार को शब्दों में बयान नहीं कर पा रहा हूं। देखने और कानूनी रूप में पंजाब का बड़ा मंत्री मैं हूं किन्तु वास्तव मं सारे मंडिमंडल की जनात तो चौधर छोटूराम ही हैं। इस बात को उनके विरोधी भी खूब जानते हैं। हमारी जमींदार सरकार ने पंजाब में आर्थिक गुलामी के जुए को उतार कर फैंक दिया है। चौ. छोटूराम जो मसला हाथ में लेते हैं उसको पूरा करके ही दम लेते हैं। उनकी सारी नीतियां उन उपेक्षित लोगों के लिए होती हैं जिन्हें उनका हक अभी तक नहीं मिला है। आज इस जनसभा से मुझे जो होसला मिला है उससे यह सरकार आपके लिये और क्रांतिकारी कार्यक्रम लागू करने के लिए प्रतिबद्ध हो गई है।

इस कांफ्रेस के बाद सर सिकन्दर के सारे बहम दूर हो गये है। उसके दिल में जो कमजोरी थी, वह निकल गई और उन्हें विश्वास हो गया कि चौधर छोटूराम के हरियाणा क्षेत्र में व्यापक समर्थक तो है ही परन्तु सारे पंजाब में भी उनका प्रभाव कम नहीं हैं। यह बात उन्हें स्वप्न में भी ख्याल में नहीं आती है पर चौधरी छोटूराम देहांत पंजाब के बेताज बादशाह हैं – सिमौर हैं अति लोकप्रिय लीडर हैं। इसके बाद पंजाब क्षेत्र के लायलपुर, गुजरावाला, झंग में उनकी ऐतिहासिक महारैलियां हुई। इन रैलियों में यूरोप के कई देशों तथा अमेरिका के प्रेस रिपोर्टर भी पहुंचे जिन्होंने लिखा कि पंजाब की असली ताकत यूनियनिस्ट पार्टी है अर्थात चौधरी छोटूराम ही पंजाब की सबसे लोकप्रिय बड़ी शख्यिसत हैं।

इस सोनीपत रैली का आयोजन 24 नवम्बर 1841 को किया गया था जो चौधरी छोटूराम का जन्मदिन था। इस रैली में बड़े–बूढ़ों, जवान, नर–नारियों सभी ने हिस्सा लिया। बड़ी सयानी औरतों की भागीदारी काफी भावनात्मक थी। कई बड़ी औरतें तो अपने पोतों को साथ ले गई ताकि उन्हें रैली में जाने में ज्यादा दिक्कत न आये। उनकी चौधरी छोटूराम को देखने की इच्छा बड़ी प्रबल थी। रेली के बाद भी उसकी चर्चा चलती रही। रोठ गांव का एक विवरण उपलब्ध है। वहां की एक बड़ी–बूढ़ी से जिसने रैली में हिस्सा लिया था, किसी ने पूछा – दादी चौधरी छोटूराम को देखा। वह तो ताऊ ज्ञानी जिस्सा छोटा सा था। दादी ने तपाक से उसे टोका – छोरे राम के दर्शन तै होंगे नहीं पर धरती आले छोटे राम के तै दर्शन होंगे। मैं तो गंगाजी नहागी। अर और सुन! यो साल में बजारा जो पड़ा सै, इसे कदै का सिब्बन बनिया ले जाता। म्हारे छोटे राम (छोटूराम) ने बनिया पै नकेल घ्याल दी, ईब वो म्हारी जिन्नस पर बुरी नजर डालने की हिम्मत नहीं कर सकता। बनिया ने तै ईब तै पैहला म्हारे पै कर्जा लाद रखा था – सारा छोटूराम ने खत्म कर दिया, अर म्हारी परक की जिन्दगी स्वर्ग की गणा दी। बनिये की बही के कागज पर दुकानदार अचार रखकर देवते मैने देखे सै। ऊपर आला हमारे राम छोटे राम की ऊमर बढ़ावै।

दीनबन्धु चौ. छोटूराम मजहब की राजनीति के खिलाफ थे

– शमशेर नेहरा

देश में साम्प्रदायिकता नाम का जहरीला विषधर आज बंटवारे के 60 वर्ष बाद भी अपना फन ज्यों का त्यों फैलाए हुए है। भ्रष्टाचार, जातिवाद, क्षेत्रवाद व भाई–भतीजावाद की बुराईयां भारतीय लोकतंत्र को खोखला किए जा रही हैं। राजनीति व्यवसाय बन गई है तथा बड़ी संख्या में अपराधियों, माफियाओं के विधायिकाओं में पहुंचने से लोकतंत्र को खतरा पैदा हो गया है। ऐसे समय में चौ. छोटूराम की विचारधारा को अपनाने की प्रासंगिकता पहले से कहीं अधिक हो गई है।

देश को साम्प्रदायिकता रूपी काले नाग से बचाने तथा करोड़ो किसानों व मजदूरों को आर्थिक शोषण से मुक्ति दिलाने व भारतीय लोकतंत्र को मजबूत आधार प्रदान करने के लिए हमें चौ. छोटूराम की नीतियों का अनुसरण करना होगा। चौ. छोटूराम मजहब को राजनीति से बिल्कुल अलग रखने के पक्षधर थे, इसे वे व्यक्ति का निजी मामला मानते थे। धर्म को वे आंतरिक जीवन को पवित्र रखने का साधन मानते थे। उनका मानना था कि राज्य एक धर्मनिरपेक्ष संस्था है और राजनीति तथा राजनीतिक संगठन विशुद्ध आर्थिक आधार पर चलाए जाने चाहिए। वर्ष 1916 में रोहतक जिले के कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में राजनैतिक सफर शुरू करने वाले चौ. छोटूराम ने 1920 में कांग्रेस द्वारा कलकता अधिवेशन में पारित असहयोग आंदोलन संबंधी धाराओं पर अपने असमति के चलते कांग्रेस को त्याग दिया था।

1918 के मान्टेगयू चैम्सफोर्ड सुधारों के अनुसार वर्ष 1920 में झज्जर में लड़े पहले विधानसभा चुनाव में असफलता के बाद में 1923 में सर फजले हुसैन के संपर्क में आए और उनसे मिलकर 'नेशनल यूनियनिस्ट पार्टी' का गठन किया। जब इस नवगठित पार्टी को धर्मनिरपेक्ष आधार पर कायम करने की बात हुई तो सर फजले हुसैन को ऐसा लगा कि मानो चौधरी साहब ने उनके हृदय की सारी मर्म व्यवस्था को समझ लिया हो। वे ही नई पार्टी के कर्त्ता–धर्ता रहे।

सर फजले हुसैन का जन्म भी एक किसान परिवार में हुआ था। उन्होंने देखा कि एक मुसलमान बोहरा अपने सहधर्मी (भाई) मुसलमान किसान को किस प्रकार चूसता है। यही बात चौधरी छोटूराम कहते थे पंजाब के महाजन और जमींदार किसान मजहबी दृष्टि से भले ही एक हों किंतु आर्थिक हित जितने एक हिन्दू महाजन के मुसलमान महाजन से मिलते हैं उतने हिन्दू किसान से नहीं मिलते। 1923 में पंजाब के असैम्बली चुनाव जीतने के बाद वे कृषि मंत्री बने तथा 26 दिसंबर, 1926 तक मंत्री रहे। इन सवा दो वर्ष के थोड़े समय में उन्होंने जनहित के अनेक काम किए। 1926 में जब गर्वनर ने चौधरी साहब को मंत्रिमड़ल में नहीं लिया तो फजले हुसैन को बड़ा दुःख हुआ। पार्टी के मुसलमानों को भी दुख हुआ। सर फजले हुसैन इस तथ्य को बखूबी समझते थे कि छोटूराम जिस मार्ग को प्रशस्त कर रहे हैं वहीं सच्चा राष्ट्रीय मार्ग है और उसी से शोषित वर्ग (किसान) को शोषकों के पंजे से निकाला जा सकता है। इसलिए वे चाहते थे कि छोटूराम आगे बढ़ें और पूरा हिन्दू, सिख, मुसलमान किसान उनके पिछे चलकर एक शोषण विहीन समाज की स्थापना करें जिसकी रचना विशुद्ध आर्थिक बुनियाद पर हो। फजले हुसैन जानते थे कि हिन्दू व मुसलमान के नाम पर जो कुछ भी हासिल किया जाएगा, उसका उपयोग शोषक ही करेंगे चाहे वे हिन्दू हो या मुसलमान।

1937 से 1945 के अपने दूसरे कार्यकाल के दौरान भी चौ. छोटूराम ने किसानों के हित के अनेक कानून बनवाए, जिसमें छोटूराम ने किसानों की लाखों एकड़ कृषि भूमि साहूकारों के चगुंल से मुक्त हो गई तथा ऐसे भी इंतजाम किए कि आगे से कोई भी गैर कृषिकार साहूकार किसी किसान की जमीन हड़प न सके। कर्जा बिल पास करवा कर किसानों को साहूकारों के कर्ज से मुक्ति दिलाई तथा लाखों मुजारों को वर्षों से काश्त की जा रही जमीनों का मालिकाना हक दिलवाया। वे अक्सर कहा करते थे 'भारत में गरीबी कोन्या, नियत की कमजोरी सै, नहीं बांट के खाणा सीखें मन में हरदम चोरी सै।'

1926 से लेकर 1936 तक चौ. छोटूराम पूरे पंजाब में पार्टी सगंठन को मजबूत करने में लगे रहे। 1935 के अधि नियम के तहत 1937 में हुए विधानसभाओं के चुनावों में पंजाब में लाहौर विधानसभा की 175 सीटों में से उनकी यूनियनिस्ट पार्टी को 102 सीटें प्राप्त हुई जबकि कांग्रेस को केवल 20, गैर खेती पेशा हिन्दुओं को 15 व मुस्लिम लीग को नाममात्र 2 सीटें हासिल हुई।

सवाल उठता है कि 1937 के चुनाव में मात्र दो सीटें प्राप्त करने वाली मुस्लिम लीग दस वर्ष बाद ही 1947 में पंजाब तथा देश का बटंवारा कराने में कैसे कामयाब हो गई? चौधरी साहब ने जिस साम्प्रदायिकता के फन को कुचलने के लिए अपना जीवन दांव पर लगा दिया था और उन्हें सफलता भी मिली, लेकिन जिन्ना की कामयाबी का राज साम्प्रदायिकता रूपी विषधर व कांग्रेस की तुष्टीकरण की वह नीति थी। जिसके सामने गांधी व नेहरू ने अपने घुटने टेक दिए थे।

वे कितने सच्चे धर्मनिरपेक्ष व राष्ट्रवादी थे, इस बात का प्रमाण उनके विभिन्न अवसरों पर दिए गए भाषणों से मिलता है।

हिन्दू–मुस्लिम एकता के वे जबरजस्त पक्षधर थे।

जब मुस्लिम लीग पंजाब में युनियनिस्ट पार्टी को खत्म करने पर तुली थी उस समय 1944 में चौ. छोटूराम ने

मुस्लिम बहुल इलाके लायलपुर में रैली करने का फैसला किया। अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर ने रैली को असफल करने की पूरी कोशिश की। मुसलमान मुल्लाओं ने भी सभा में न जाने के फतवे जारी किए। इस सबके बावजूद पचास हजार लोग उस रैली में शामिल हुए। पंजाब में मुस्लिम लीग व युनियनिस्ट पार्टी की यह पहली टक्कर थी व इस सभा की सफलता के जिन्ना व गर्वनर जनरल तक तार खड़के। इस कान्फ्रेंन्स में बहुत ही साफ शब्दों में चौधरी साहब ने कहा, "हम मौत पसंद करते हैं, विभाजन नहीं।" मजहब तो व्यक्गित जीवन से संबंध ा रखता है और वह बदला भी जा सकता है, लेकिन जाति बदली नहीं जा सकती। हम सब किसानों का खून का रिस्ता है।"

पाकिस्तान के गठन को वे हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों के लिए खतरनाक मानते थे। पंजाब के कांग्रेसियों को मनोवृत्ति पर चौधरी साहब को खेद था। जिन दोनों पंजाब का यह राष्ट्रवादी चौधरी भारत–विरोधी तत्वों का दमन कर रहा था, उन दिनों पंजाब के कांग्रेसी नेता मुस्लिम लीग की मिन्नतों में लगे हुए थे। इसका एक आश्यर्चजनक उदाहरण उस समय मिला जब खाकसारों के दमन पर डाक्टर गोपीचंद भार्गव ने काम रोको प्रस्ताव में मुस्लिम लीग के सदस्यों का साथ दिया और पूरे दुस्साहस के साथ कहा था "खाकसारों पर गोली नहीं चलानी चाहिए थी और चलाना ही आवश्यक था तो इतनी देर तक नहीं चलानी चाहिए थी।"

मजहब के नाम पर बनने वाले इस नये इस्मालिक राज्य पाकिस्तान को सर छोटूराम बंगाल तथा पंजाब के हिन्दुओं तथा सिखों के लिए अत्याचार का क्षेत्र समझते थे।

रात–दिन की मेहनत और अपने कौशल द्वारा चौध ारी साहब ने पंजाब में भारत विरोधी तत्वों पर काबू पा लिया था और अपने नवयुवक प्रीमियर साथी खिजर हयात द्वारा यह साबित कराया था कि मुसलमानों में भारत भक्तों की कमी नहीं है। अंग्रेज भी यी सोचने लगे थे कि मुस्लिम लीग गृहयुद्ध में सफल नहीं हो सकती। ऐसे समय गांधीजी के प्रिय साथी व उन्हीं के समधि वरिष्ठ कांग्रेस नेता राजगोपालाचार्य ने आवाज बुलंद कर दी कि जब मुसलमान हिन्दुओं के साथ नहीं रहना चाहते तो उन्हें अलग होने की आजादी दे दी जाए और उस अलगाव के लिए उन्होंने एक फार्मूला भी पेश कर दिया। चौधरी साहब ने जब यह समाचार सुना तो वह अवाक रह गए और सिर पकड़कर बड़ी देर तक बैठे रहे। देखने वालों का कहना है कि इस घटना के बाद सदा प्रसन्न रहने वाले चौधरी साहब को कभी हंसते नहीं देखा गया। राजगोपालाचार्य के फार्मूले से उन्हें भारी आघात लगा और उनका देशभक्त हृदय कितना क्षुब्ध हुआ, इसका आभास उनके उस पत्र से मिलता है जो उन्होंने शिमला से 15 अगस्त, 1944 को महात्मा गांधी को लिखा था। इस पत्र में उन्होंने गांध ी को लिखा था। इस पत्र में उन्होंने गांधी की 'टू नेशन थियरी' का प्रबल विरोध किया था।

भारत को अखंड बनाए रखने के लिए उन्होंने राणा प्रताप की तरह व्रत लिया और सब आराम त्याग दिए। एक दिन में तीन–चार रैलियों को संबोधित करते और रात में 11 बजे से 2 बजे तक मुश्किल से तीन घंटे सोते। रात 2 बजे जागकर सरकारी फाइलों को निपटाते। अथक परिश्रम के चलते देश के बटंवारे को रोकने वाले योद्धा ने 9 जनवरी, 1945 को भुजाएं फैलाकर खिजर हयात खां का आलिंगन किया और धीरे से कहा, 'भगवान आपकी सहायता करे।' खिजर साहब की आंखो से आंसुओं की धारा बह निकली और लाहौर के गार्डन टाउन में स्थित कोठी में, जो शक्ति भवन के नाम से प्रसिद्ध थी, में उस महापुरूष के अंतिम दर्शन के लिए सभी वर्गो का भारी जनसमूह उमड़ पड़ा।

उनके असामयिक निधन 12 जनवरी, 1945 को स्टेट्समैन अखबार ने अपनी श्रद्धांजलि में लिखा कि सर छोटूराम के निधन से पंजाब के सार्वजनिक जीवन पर भारी आघात पहुंचा है, वे प्रबल विचारों के व्यक्ति थे, मातृभूमि के सच्चे सपूत थे और उस यूनियनिस्ट पार्टी के स्तंभ थे जिसने प्रांत में एक लंबे समय तक उल्लेखनीय स्थिरता पैदा की। उनका स्वर्गवास ऐसे समय पर हुआ जबकि पंजाब को एक सच्चे दृढ़–व्यक्ति की आवश्यकता थी।

GLOBAL WARNING - MYTH OR REALITY

R.N. MALIK

This short article is in response to the lead article on climate change "Earth - Shastra" (Tribune dated: 22/10/2018) wherein the two authors have simply restated the oft repeated clichés on the subject. The fact of the matter is that carbon dioxide is not an air pollutant. Its pre-industrial concentration in air was 0.03% or 300ppm(parts per million). Now it is estimated to be 350ppm and may rise to 400ppm by 2050. 300ppm concentration is said to be harmless i.e. cannot cause global warming by entrapping the solar rays (greenhouse effect). Therefore, mere increase of 50 or 100 ppm cannot cause earth shaking changes in the climate. Moreover, 400 molecules of CO2 in onemillion molecules of air cannot cause any barrier in the path of solar rays and entrap the heat as the rays will easily pass by the CO2 molecules. Also the

increased concentration of CO2 is not uniformly distributed over the entire earth surface and is limited over densely populated areas only. CO2 concentration over snow bound areas will always remain unchanged because of vast space dimensions and conversion of some of CO2 into weak carbonic acid during rainfall.

It is a fact that burning of massive quantities of fossil fuels continuously releases vast amount of CO2 into the atmosphere. Chief culprits are thermal power plants where 15 tonnes of coal is burnt to generate one MW of power. This CO2 mingles with air and temporarily increases its concentration in limited stretches. On the other hand, it is simultaneously being consumed by continuous growth of plants and crops and concentration of CO2 fluctuates between 300 – 350 ppm. Over the centuries, nature has maintained CO2 balance between generation and consumption by plant kingdom through the mechanism of CO2 cycle. Higher concentration of CO2 is extremely useful for higher yields of crops. That is by farmers are growing vegetables in polly houses these days. Farmers had a record yield of 27 quintals per acre for wheat crop last year. This increased yield consumed the extra concentration of CO2 during the winter season. CO2 cycle is like the rainfall cycle. Every year, massive amount of water travels from the sea to the land surface in the form of rainfall. Substantial part of this water is retained on the surface of the earth and does not flow back to the sea. Still the level of the sea remains constant and does not go down. Same is true for CO2 concentration in the air.

Possibility of raising of sea level and drowning of coastal areas as a result of snow melt due to purported rise of atmospheric temperature by 2 degree centigrade is equally preposterous because of two reasons.Firstly,two units rise in temperature will be able to melt only limited volume of snow. For example, snow in Siberia at -35 degree centigrade will remain intact as it will not melt at -33 degree centigrade. Secondly, let us hypothetically assume that the entire snow melts due to global warning. The volume of water so generated due to total snow melt when spread over the entire sea surface will hardly increase the level by 1cm. Hence the specter of global warming by increasing concentration of CO2 leading to climate change is imaginary, deliberate and tendentious (Remember the climate gate scandal of Paris Conference). Infact,the climate change is not a new phenomena. Climate has been changing in the past and will continue to change in the future as well. For example, India had a large frequency of famine occurrence between 1747 – 1947 when generation of CO2 was minimal. There were no thermal power plants at that time to belch out clouds of smoke or large number of vehicles to release exhaust gasses. Last great famine continued for 7years between 1939 – 1947. Thereafter, India had only one famine in 1987. Last week, temperature in England came down to -5 degree C, something that never happened in the past in the month of October. Few years back, a conference was being held in Boston on the subject of global warming and it soon ended up because there was heavy snow fall outside.

The fact of the matter is that there are innumerable factors responsible for climate change and some of them are still unknown to meteorologists and the subject still remains largely un explored. One of the important factors is extensive irrigation of land surface and existence of big water bodies like Govind Sagar. Continuous evaporation from irrigation and water bodies has moderated both the summer and winter temperature peaks . Earlier agricultural lands used to be kept fallow during two summer months of May and June(not anymore now)and this helped the air to rise high creating depression conducive to timely arrival of monsoon.(Rainfall pattern also depends upon El-nino effect) .Paving of surfaces as a result of increasing size of urban areas is another source of rising local temperatures. Throwing of massive heat load from increasing number of A.C. buildings is the third important factor to do so. Hot exhaust gases and dust from moving vehicles form a cloud over urban areas and convert them into virtual hot gas chambers. These manmade activates cause significant changes in the ambient air temperatures with corresponding changes in local and regional climate and CO2 is not the actual culprit

Let us assume that there is continuous global warming. (It has not been measured and proved rationally and scientifically so far. For example, there is no agency that continuously measures temperatures at different stations in India to calculate global warming). But it can be easily reduced by maximizing the use of solar energy (water heating, cooking and power generation) and extra planting of trees. So in the final analysis, the spectere of global warming and climate change is more of a myth than reality.

Names of Donors for Flood Victims of Kerala State

Sh. Rakesh Joon	HL Residency Pvt. Ltd., B-12, Vishrantika Dwarka, Delhi	50000.00
Dr. M. S. Malik, IPS (Rtd.)	222, Sector 36-A, Chandigarh	11000.00
Pioneer Urban Land & Infrastructure Delhi.	Pioneer Urban Land & Infrastructure Delhi.	21000.00
Sh. Kali Ram Kundu	1695, Sector 3, Kurukshetra	12000.00
Dr. Sarita Malik, HCS	222, Sector 36-A, Chandigarh	11000.00
Sh. L. R. Budania	Budaniya Book Shop Secor 36, Chd	11000.00
Sh. Karan Kerwel	# 1522, Sector 18-D, Chandigarh	11000.00
Sh. Ritesh Kerwel	# 1522, Sector 18-D, Chandigarh	11000.00
Sh. Jasmer Singh	VPO: Bilas Pur Distt. Yamuna Nagar	11000.00
Sh. Jai Singh	VPO: Rajli Distt. Hisar	11000.00
Sh. R. K. Malik	969, Sector 26, Panchkula	5100.00
Sh. B. S. Gill	42, Sector 43-A, Panchkula	5100.00
Sh. Laxman Phogat	195, NAC, Manimajra, U.T.	5100.00
Sh. Jai Pal Punia	507, Sector 21, Panchkula	5100.00
Sh. Naresh Dahiya	Vill: Peermuchhala, Zirakpur, Pb.	5100.00
Sh. Devi Lal S/o Sh. Diwan Singh,	Vill: Chobra, Distt. Fatehabad, HR	5100.00
Sh. Wazir Singh	368, Manav Colony, Saketri, Haryana	5100.00
Sh. Zora Singh Deswal	621, Amrawati Colony, Pinjore	2100.00
Sh. Sukhbir Singh	162, Sector 39, Gurgaon	2100.00
Sh. Chander Pal Gill	1078, Sector 3, Rohtak	1111.00
Sh. Prem Singh	292/10. R.G. Colony, Rohtak	1111.00
Sh. M. S. Phogat	217, Saini Vihar, Baltana, Pb.	1100.00
Sh. J. S. Dhillon	1330, Sector 21, Panchkula	1100.00

52 साल का हो चला हरा भरा हरियाणा

महेंद्र सिंह मलिक

किसी भी इंसान के लिए 52 साल की उम्र वो उम्र होती है जब वह अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों को या तो पूरा कर चुका है या पूरा करने की मियाद पर खडा होता है। इसी के साथ वह जीवन भर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सामाजिक प्रतिष्ठा के उस पायदान पर खडा होता है जहां तक वह अपना सर्वश्रेष्ठ देकर पहुंच सकता था। एक प्रदेश के रूप में हमारा हरियाणा 1 नवंबर 2018 को 52वें वर्ष में कहां तक पहुंचा है और क्या चुनौतियां मुंह बाएं खडी है। इस पर चिंतन अब जरूरी है। 2019 की भी हम दहलीज पर खडे हैं। आने वाले साल में न केवल लोकसभा के चुनाव होगा। बल्कि हरियाणा विधानसभा के भी चुनाव होगा।आइए चर्चा करते हैं 52 साल के हमारे हरियाणा के सामने मुंह बाएं खडी चुनौतियों की।

पानी: खेती पर निर्भर हरियाणा में पानी के बिना कुछ भी संभव नहीं है। ये हमारी जीवन रेखा है। यमुना नदी का अस्तित्व पूर्वी सीमा में है। दक्षिण-पश्चिमी हरियाणा अभी भी रेतीला क्षेत्र माना जाता है। सरस्वती-नदी को लेकर बड़ी-बड़ी परियोजनाएं घोषित हुई हैं लेकिन उनका धार्मिक, पर्यटन एवं सांस्कृतिक-पर्यटन की दृष्टि से ही फिलहाल महत्व है। मौसमी नदी के रूप में घग्घर है जो राजस्थान में विलुप्त होने से पूर्व में लगभग 460 किलोमीटर क्षेत्र में बहती है। लेकिन यह वस्तुत: मौसमी नदी है। इसी तरह से चौताग, टागरी और मारकंडा की जलधाराएं हैं। मेवात की पहाड़ियों में दोहन, इन्दौरी व कासावरी जलधाराओं का भी सीमित अस्तित्व है। कुल मिलाकर हरियाणा के पास पंजाब की रावी, ब्यास व सतलुज नदियों सरीखे व्याप्क नदी जल संसाधन नहीं है। जल-संवर्द्धन की कोई बड़ी योजना भी फिलहाल निमार्णाधीन नहीं है। एक नवंबर के 1966 के समय में और आज में ये बडा बदलाव हरियाणा में आया है हमारे यहां निरंतर जोहडों की संख्या कम हो रही है। भूमिगत पानी का स्तर लगातार नीचे गिरता जा रहा है। सच्चाई तो ये है कि हरियाणा में भूमिगत जल की स्थिति खतरे की घंटी को पार कर गई है। जल प्रबंधन विशेषज्ञों का कहना है कि यदि भूमिगत जल की निकासी इसी प्रकार जारी रही तो खेतों की प्यास बुझना तो दूर हरियाणावासी पानी की एक-एक बूंद के लिए तरस जाएंगे। राज्य सरकार की अपनी ही एक एजेंसी द्वारा किए गए अध्ययन में तो राज्य के अंबाला, गुडगांव, कैथल, करनाल, कुरुक्षेत्र, महेंद्रगढ़, रेवाड़ी, यमुनानगर और पानी जिलों को भूमिगत जल निकासी की दृष्टि से डार्क जिले घोषित किया गया है। करीब चार साल पहले एक सर्वे में पता चला था कि राज्य के 19 जिलों में से 9504.32 मिलियन क्यूबिक पानी में से 7081.63 मिलियन क्यूबिक पानी की निकासी कर ली गई है और अब सिर्फ 2422.69 क्यूबिक पानी ही बचा है। अध्ययन के मुताबिक 74 प्रतिशत भूमिगत जल की निकासी की जा चुकी है। भूमिगत जल की दृष्टि से भिवानी, हिसार और फतेहाबाद की स्थिति भी सुखद नहीं है। रोहतक जिले के कुछ गांवों के साथ-साथ झज्जर व सोनीपत में भी पानी का संकट लगातार गहरा रहा है। सोनीपत में पानी की निकासी इसी प्रकार जारी रही तो वहां भी पानी का घोर संकट पैदा हो जाएगा। यहां के राई, मुंडलाना और गन्नौर ब्लॉक में भूमिगत जल की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। करनाल, कुरुक्षेत्र, यमुनानगर, पानीपत और अंबाला ऐसे जिले भी थे जहां पानी की पर्याप्त भंडार है। यह अलग बात है कि वहां भी भूमिगत जल के दोहन की गति खतरे की घंटी को पार कर रही है। पानीपत, फरीदाबाद, गुड़गांव, रेवाड़ी, भिवानी और महेंद्रगढ़ में तो भूजल स्तर की स्थिति अत्यंत विस्फोटक है। महेंद्रगढ़ जिले के 1940 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फेले 19596 नलकूपों में से 7002 नलकूपों ने काम करना बंद कर दिया है। वस्तु स्थिति तो इससे भी बहुत आगे हैं। इस जिले में 10,000 से अधिक नलकूप पूरी तरह फेल हो गए हैं। हालत की गंभीरता का अंदाजा इस बात से भी पानी की भरमार वाली कुरुक्षेत्र जिले के लाडवा, शाहबाद और थानेश्वर के 1024 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले 273 गांवों के 19797 नलकूपों में से 9877 नलकूपों ने काम करना बंद कर दिया है। यानी यहां आधे से अधिक नलकूप नकारा हो गए हैं। भूमिगत जल स्तर की स्थिति करनाल में भी बेहद पतला है। यहां के घरौंडा और नीलोखेड़ी ब्लॉक के 940 वर्ग

अपने को संकट में डाल कर कार्य संपन्न करने वालों की विजय होती है, कायरों की नहीं। - जवाहरलाल नेहरू

किलोमीटर क्षेत्र में फैले 124 गांवों में 1291 नलकूपों ने काम करना बिल्कुल बंद कर दिया है। यह संख्या सिर्फ 124 गांवों के नलकूपों की है। अब इसका समाधान ये है कि बेकार बहते पानी को धरती के अंदर जाने दिया जाए और ये काम रिचार्जेबल पंपों के जरिए किया जा सकता है लेकिन अभी तक किसी भी तरह के गंभीर प्रयास इस और नहीं किए गए हैं। आने वाले समय में ये स्थिति किस स्तर बिगडेगी इसकी कल्पना मात्र भी भयावह है।

परिवहन और सडकें प्रदेश का अधिकांश भाग राष्ट्रीय राजधानी परियोजना यानि एनसीआर में शामिल है। हरियाणा के फरीदाबाद, गुडगांव, मेवात, रोहतक, सोनीपत, रेवाड़ी, झज्जर, पानीपत, पलवल, महेंद्रगढ़, भिवाड़ी, जींद और करनाल जैसे जिले एनसीआर में आते हैं। जुलाई 2013 में एनसीआर में तीन और जिलों को शामिल किया गया है जिसमें हरियाणा राज्य के भिवाड़ी और महेंद्रगढ़ शामिल किए गए। प्रदेश में अभी भी कुछ क्षेत्रों में सड़क मार्ग बेहद खुशगवार हैं लेकिन कुछ क्षेत्र अभी भी खस्ता हालत में हैं। केजीपी और केएमपी बनने से प्रदेश में काफी सहूलियत मिली हैं असल में अब भी दो चेहरों की तरह हरियाणा की परिवन व्यवस्था है। कहीं फ्लाईओवर बहुतायत में हैं तो कहीं संपर्क सड़कें भी गायब हैं। सर्वाधिक बुरी हालत दक्षिणी हरियाणा, फरीदाबाद, गुरुग्राम और मेवात क्षेत्र में हैं। प्रदेश में वैसे 23684 किलोमीटर लम्बी सड़कें हैं। लगभग 29 नेशनल हाईवे हैं। करीब चार हजार बसें प्रतिदिन 15 लाख किलोमीटर का सफर तय करती हैं और इससे कहीं ज्यादा अवैध वाहन दिनभर प्रदेश की सडकों पर मौत बनकर दौडते है। इसी का दूसरा पहलू ये भी है कि अगर ये प्राइवेट वाहन ना हों तो राज्य की परिवहन व्यवस्था एक मजाक भर ही लगेगी। दूसरी और पिछले दिनों प्रदेशभर के लोगों ने रोडवेज की हडताल का भी सामना करना पडा और पहली बार पंद्रह दिनों से ज्यादा समय तक न केवल बसें बंद रही बल्कि सरकार को भी आलोचना का सामना करना पडा। किलोमीटर परमिट पर बसें लाने की कवायद जहां कर्मचारियों को नहीं भा रही है वहीं सरकार अपनी योजना पर अडी है। इस समस्या का अभी तक कोई समाधान नहीं मिल सका है।

उद्योग व्यापार करने की सुगमता यानी ईज ऑफ डुईंग बिजनेस के मामले से समझा जाता है कि कौन सा राज्य व्यापारियों के लिए अच्छा माहौल उपलब्ध कराता है जिससे व्यापार बढ़ता है, रोजगार के अवसर बढ़ते हैं और राज्य का विकास होता है। आंध्र प्रदेश को व्यापार के लिए सबसे आसान कारोबार वाले राज्यों की रैंकिंग में पहला स्थान दिया गया है वहीं हरियाणा देश में तीसरे नंबर पर है। हरियाणा की समूची औद्योगिक संस्कृति गुड़गांव, फरीदाबाद और बल्लभगढ़ व बहादुरगढ़ तक सीमित है। पानीपत हैंडलूम का विश्वस्तरीय केंद्र है लेकिन अभी भी शहर के भीतरी भाग उपेक्षा का शिकार हैं। करनाल में सम्भावनाएं ढेरों हैं लेकिन स्तरीय काम नहीं हो रहा। यही स्थिति अम्बाला के साइंस उद्योग व सिरसा के सूत उद्योग की है। जरूरत इस बात की है कि गुड़गांव की औद्योगिक'कल्चर'का विकेंद्रीकरण हो। ऐसा न हो पाने के कारण विकास भी थम सा गया है और रोजगार के संसाधन भी सिकुड़ते जा रहे हैं। हरियाणा में हिंदुस्तान नेशनल ग्लास, मारुति उद्योग लिमिटेड, एस्कॉर्ट्स, हीरो होंडा, अल्काटेल, सोनी, व्हर्लपूल इंडिया, भारती टेलीकॉम, लिबर्टी शूज और हिंदुस्तान मशीन टूल्स नामक बडी औद्योगिक इकाइयां हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किए जाने की जरूरत है।

जनगणना व जाति : 2011 की जनगणना के अनुसार राज्य में 62.45 प्रतिशत आबादी हिन्दुओं की है। इनमें 25 प्रतिशत जाट, 4.19 प्रतिशत सिख, 7.03 प्रतिशत मुस्लिम हैं। शेष अन्य जातियों से है। मुस्लिम ज्यादातर मेवात में हैं या कुछ यमुनानगर में। प्रदेश अतीत में लिंगानुपात के लिए नकारात्मक चर्चा में रहता था, मगर अब स्थिति में कुछ सुधार हुआ है। लेकिन मुख्य चुनौती इस बात की है कि पारस्परिक सौहार्द और प्रेम गायब हो रहा है। हाल फिलहाल के वर्षों में हरियाणा में जातीय तनाव बढ़ा है और एक साथ मिलक बैठकर खाने वाली हरियाणवी संस्कृति को अच्छी खासी ठेस पहुंची है। हरियाणा में जातीय दंगे भी हो चुके हैं और जान व माल का नुकसान भी हरियाणा ने झेला है। जाति के नाम पर कुछ नेताओं ने एक दूसरे पर छींटाकसी कर पूरे प्रदेशभर के लोगों के मन में वैरभाव के बीज बोने की कोशिशें की हैं, जो एक भयानक खतरे का संकेत है।

शिक्षा एवं साक्षरता : प्रदेश में साक्षरता की दर अभी भी 76.64 है। हालांकि प्रदेश में अब सरकारी व निजी विश्वविद्यालयों की भरमार है लेकिन ऐसा कोई शिक्षण संस्थान नहीं है जिस पर प्रदेश गर्व कर सके। सर्वाधिक समस्या एवं चुनौती शोध कार्यों की हैं। हरियाणा के सरकारी स्कूलों की दशा पढाई में अच्छी नहीं कही जा सकती है वहीं निजी शिक्षण संस्थानों ने बडी फीस और गुणवत्ता भी कोई आम आदमी की पहुंच में नहीं है। जबकि हरियाणा की राजधानी चंडीगढ और हरियाणा से सटे दिल्ली हरियाणा से कहीं आगे नजर आते हैं।

बोली : हरियाणवी बोली में भोजपुरी व अवधी और ब्रज सरीखे सभी भाषा-तत्व विद्यमान हैं। इस दिशा में यहां के एक विद्वान डॉ. जगदेव सिंह ने ठोस कार्य भी किया था। लेकिन इस विषय पर उनसे पहले या बाद में कोई विशेष प्रगति नहीं हो पाई। डॉ. जगदेव सिंह ने तो व्याकरण व लिपि संबंधी मानक भी तय कर दिए थे लेकिन इसके बाद बहुत ज्यादा गंभीर प्रयास हमारी बोली को विकसित और लोकप्रिय करने के लिए नहीं हो पाए। हालांकि पिछले कुछ सालों में वॉलीवुड जिस तरह से हरियाणा की बोली को लेकर चरित्र फिल्मों में ला रहा है उसने हरियाणा की भाषा की अलग ही पहचान बनाई है वहीं पंजाब के कलाकारों की तरह हरियाणा के कलाकारों ने जिस तरह के गाने बनाए हैं उसने हरियाणवी को अलग ही पहचान दिलाई है। अब हरियाणवी में साहित्य भी रचा जाने लगा है तो निश्चित तौर पर यह एक बडा कदम साबित हो सकता है। अगर सरकार भी हरियाणवी को और गंभीरता से ले तो नतीजे जल्दी भी आ सकते हैं।

कानून व्यवस्था : हरियाणा में कानून व्यवस्था चिंताजनक स्थिति पर हैं। महिलाओं के खिलाफ अपराध बढ रहे हैं वहीं फिरौती डकैती जैसी घटनाओं में भी निरंतर इजाफा हो रहा है। यहा गैंगवार भी बढती जा रही हैं जो दिखाती है कि हरियाणा में कानून व्यवस्था किस तरह कायम है। इसके साथ यहां नशे का अवैध जाल फैलता जा रहा है और हमारी युवा पीढी को अपने आगोश में ले रहा है। एनसीआर में भी क्राइम का ग्राफ लगातार बढता जा रहा है।

ये सुकून की बात : हरियाणा का नाम आते ही दूध दही की बात जरूर

चलती है और ये सुकून की बात है कि दूध उत्पादन में हरियाणा निरंतर तरक्की कर रहा है। पशुधन किसान की अतिरिक्त आय का स्त्रोत है और कहा भी जाता है कि जिसके घर काली, उसकी रोज दीवाली। यहां काली का मतलब मुर्राह नस्ल की भैस से है। 2019 में हरियाणा के बाशिंदों को देश के अन्य राज्यों के लोगों की तुलना में 2.5 गुना अधिक दूध पीने को मिलेगा। पिछले एक साल में हरियाणा में दूध की उपलब्धता 72 ग्राम प्रति व्यक्ति तक बढ़ गई है। ताजा आंकड़ों के अनुसार प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 950 ग्राम तक पहुंच गई है। गत वर्ष यह 878 ग्राम थी। गत वर्ष 89.75 लाख टन दूध उत्पादन हुआ था, जो बढ़कर अबकी बार 97.84 लाख टन तक पहुंच गया। हरियाणा से आगे पंजाब है, जहां प्रति व्यक्ति प्रति दिन दूध की उपलब्धता 1015 ग्राम है। हरियाणा में पंजाब से 4 से पांच फीसदी तक अधिक दूध की ग्रोथ पिछले कई सालों से चल रही है।

प्रदेश में मुर्राह भैंसों की संख्या लाखों में है। मुर्राह के दीवाने विदेश के लोग भी हैं। कई देशों में मुर्राह को ले जाया गया, जहां वे हरियाणा की तरह दूध दे रही हैं। इसलिए इनकी मांग बढ़ रही है। देश के बिहार, यूपी, ओडिशा, साउथ इंडिया में भी मुर्राह का पालन होने लगा है। हरियाणा में दुधारू पशुओं की संख्या करीब 89.98 लाख के करीब है। इनमें 60.85 लाख भैंस और 19.08 लाख गाय हैं। वर्ष 2018-19 में प्रदेश में 1600 नई डेयरी इकाइयों की स्थापना होनी है, इससे दुग्ध उत्पादन और बढ़ने की संभावना है।

आइए चले हैं स्टेच्यू आफ यूनिटी देखने

महेंद्र सिंह मलिक

31 अक्टूबर 2018 यानी को गुजरात के सरदार सरोवर बांध के समीप दुनिया की सबसे ऊंची 182 मीटर सरदार वल्लभ भाई पटेल की प्रतिमा का अनावरण किया गया। ये प्रतिमा दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा है। हरियाणा की जनता में सरदार पटेल के प्रति अगाध सम्मान है। सरदार पटेल जब गृह मंत्री के रूप में बिखरे भारत को एक करने का प्रयास कर रहे थे तब उन्होंने कहा था कि अगर आज रहबरे आज जीवित होते तो कम से कम पंजाब की तो मुझे कोई चिंता ही नहीं होती। खैर सरदार पटेल की प्रतिमा के अनावरण के साथ ही भारत में पर्यटन के लिहाज से एक और बड़े स्थान की तरफ दुनिया का ध्यान आकर्षित होगा वहीं भारतीय स्वतंत्रता इतिहास के इस अमिट पुरुष का नाम विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा के साथ दुनिया में अमर हो हो गया। प्रतिमा के बनने की कहानी जानने के लिए पत्रकार धर्मेंद्र कंवारी सीधे स्टेच्यू आफ यूनिटी तक पहुंचे और चार दिन तक प्रतिमा निर्माण के हर उस पहलू की जानकारी ली जो आपके लिए जानना जरूरी है। तो आए चलते हैं गुजरात के सरदार सरोवर बांध पर मौजूद दुनिया के की सबसे बड़ी प्रतिमा स्टेच्यू आफ यूनिटी के रूप में अनावरण से पहले ही विख्यात हो चुकी है इसके साथ ही करें बडोदरा जैसे खूबसूरत शहर को भी एक पत्रकार की नजर से।

सुबह के साढे आठ बजे थे जब नई दिल्ली से रवाना होकर पश्चिम एक्सप्रेस ने यात्रियों समेत मैं और मेरे तीन अन्य साथियों के दल को बड़ोदरा के रेलवे स्टेशन पर उतारा। बाहर निकलते ही टैक्सी वाले ज्यों ही हमारी तरफ तरफ लपके तभी मैंने एक को कहा, मुझे स्टेच्यू आफ यूनिटी पर जाना है, चलेंगे आप?'' वो गुजराती ही था लेकिन हिंदी भी बहुत अच्छी थी, एक बड़ी सी मुस्कान के साथ कहा, गजरूर, मैं नहीं आपको कोई और लेकर जाएगा लेकिन पहले आप बड़ोदरा को तो देख लें। बहुत थके होंगे पहले होटल जाकर फ्रेश हो लें फिर आपको टैक्सी वाला वहां लेकर जाएगा।'' ये वो पहली झलक थी जो बडोदारा के टैक्सी वालों से लेकर होटल वालों तक चेहरे पर मुस्कान रही थी क्योंकि अब उनको यकीन था कि लोग सरदार पटेल से मिलने को बेताब हैं। यानी स्टेच्यू आफ यूनिटी से उनका भविष्य बदलने वाला है। खैर, हमारा होटल पहले से ही रेलवे स्टेशन से वॉकिंग डिस्टेंश पर ही बुक था इसलिए बदले में एक बड़ी सी मुस्कुराहट के साथ हम अपने रास्ते पर बढ़ चले। होटल पहुंचकर रिस्पेशन पर फिर अपना वही सवाल पूछा, स्टेच्यू ऑफ यूनिटी कैसे जाएंगे? '' वहां भी एक बड़ी सी मुस्कान के साथ रिस्पेशनिस्ट ने कहा, आजकल हमारे होटल में स्टेच्यू ऑफ यूनिटी तक जाने वाले लोग ही ज्यादा आ रहे हैं, आप चिंता ना करें, पहले आफ चेक इन कर लें, थोडा आराम करें, उसके बाद हम आपको ट्रैवर्ल्स की एक लिस्ट मुहैया करवा देंगे, आप अपने स्तर पर बुकिंग कर लें। होटल में चेक इन के बाद शावर और बाद में कंपलीमेंटरी स्वादिष्ट नाश्ते के बाद हम स्टेच्यू आफ यूनिटी पर जाने बेहद उत्सुक थे।

हैलो, हम चार लोग हैं, स्टेच्यू आफ यूनिटी जाना है, आप कितने रुपये चार्ज करेंगे-रूम से ही एक ट्रैव्लर्स के पास कॉल की गई। सामने से एक गुजराती को बहुत ही प्यार से सावधानीपूवर्क हिंदी में बात करते सुनकर अलग ही सुकून मिला। तीन टैक्सी वालों से बात करने के बाद एक को स्टेच्यू आफ यूनिटी पर चलने के लिए बुला लिया गया। पंद्रह मिनट बाद ही होटल की रिस्पेशन से सूचना मिली की विपुल पटेल अपनी शानदार इनोवा के साथ हमें ले चलने तैयार था।

गाडी में बैठते ही विपुल ने सीट बैल्ट कसते हुए कहा, साहब पिछले कई महीनों से स्टेच्यू आफ यूनिटी ल÷तार आना जाना हो रहा है। आप आराम से बैठें, दो घंटे बाद हम केवडिया पहुंच जाएंगे और आप इत्मीनान से स्टेच्यू आफ यूनिटी देख लेना। वापसी में मैं आपको कुछ और अच्छी जगह भी दिखा दूंगा।'' (ये वो गुजराती बिजनेस का नजरिया था जो टूरिस्ट को न केवल स्टेच्यू आफ यूनिटी दिखाने के लिए बेताब है बल्कि दूसरी जगहों को भी लोकप्रिय करना चाहता है। 20 मिनट शहर की खुली सड़कों पर अपनी इनोवा को दौड़ाने के बाद विपुल ने एक नई बन रही फोरलेन पर चढ़ाया और खुद ही अपनी तरफ से जानकारी दी, 31 तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्टेच्यू आफ यूनिटी का उद्घाटन करने आ रहे हैं, उससे पहले ये फोर लेन तैयार होना है। यहां रात-दिन काम चल रहा है और लग रहा है कि 31 तक इसे हर हाल में पूरा कर ही देंगे।

हम जैसा बोते है, वैसा काटते हैं। हम अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करते हैं। –स्वामी विवेकानंद

ज्यों ज्यों हम नमृदा डेम की तरफ बढे दूर से एक महामानव रूपी प्रतिमा सिर पहाड़ों के बीच से दिखाई दिया तो रोमांच से भर गया। मैंने ड्राइवर विपुल से पूछा तो उसने बताया कि हम अभी आठ किलोमीटर की दूरी पर हैं और यहां से स्टेच्यू आफ यूनिटी की प्रतिमा दिखाई देने लगती है। विपुल पटेल की इनोवा हमें लेकर स्टेच्यू आफ यूनिटी की तरफ बढी और रोमांच और प्रतिमा को देखने का कौतूहल अपने आप ही बढ़ने लगा। प्रतिमा ज्यों ज्यों नजदीक आ रही थी, निर्माण कार्य और मजदूरों की संख्या भी बढती जा रही थी। प्रतिमा से करीब दो किलोमीटर दूरी पर हमने जानकारी लेने के लिहाज से निर्माण कंपनी एलएंडटी के आफिस से दो जनसंपर्क अधिकारियों को अपने साथ लिया और प्रतिमा की तरफ पैदल ही बढ चले। सबसे पहले हम सभी को पहने ही रखने की हिदायत के साथ हेल्मेट दिए गए, जिन्हें हमने तुरंत ही पहन लिया। ऐसा वहां चल रहे निर्माण कार्यो को देखते हुए जरूरी भी था।

प्रतिमा से करीबन पांच सौ मीटर पहले ही एक बड़ा सा भवन बनता हुआ दिखाई दिया तो एक पीआओ संजय तिवारी ने बताया,गये श्रेष्ठ भारत भवन बनाया जा रहा है, यहां थ्री स्टार होटल की सुविधाएं मिलेंगी, इसमें 52 कमरे होंगे और यहां सिर्फ पयर्टक रूकेंगे। इसके बाद पर्यटक सबसे पहले प्रतिमा से ठीक पहले बने टिकट घर पहुंचेंगे और यहां से सभी की डिजिटल एंट्री हो÷ी। इसके साथ ही फूड कोर्ट बनाया जा रहा है जहां एक बार में पांचसौ लोग रिफ्रेशमेंट ले सकते हैं। रिफ्रेशमेंट के बाद सीधे स्टेच्यू आफ यूनिटी की तरफ चलने के लिए एक शानदार रास्ता बनाया गया है, साथ ही स्टेच्यू आफ यूनिटी तक पहुंचने के लिए एलिवेटर भी लगाया गया है। जो पैदल ना चलना चाहे उन्हें आसानी रहेगी।''

उनके जानकारी देने के साथ-साथ मैं अपनी गर्दन को पूरी ताकत के साथ पीछे की तरफ घुमाकर स्टेच्यू आफ यूनिटी को निहार रहा था और मुझे ऐसा करते देख एलएंडटी के इंजीनियर एमवी राव खुद ही मेरे पास आ गए और बोले, आप पहले आराम से प्रतिमा को देखें, यहां आने वाला हर शख्स कुछ देर ऐसे ही करता है। इसके बनने के बाद मैं खुद बच्चों को यहां लेकर आने वाला हूं। विश्व की सबसे बडी प्रतिमा के साथ जुडने पर मुझे जिस तरह गर्व महसूस होता है उसी तरह यहां आने वाले हर शख्स को प्रतिमा को देखकर भी गर्व होता है तभी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्टेच्यू आफ यूनिटी बनाई है।'' सच में ही एम वी राव का कहना बिल्कुल सही था। सामने बांध के गेट नजर आ रहे थे और डेम की ऊंचाई से कहीं बडी स्टेच्यू आफ यूनिटी की सरदार वल्लभ भाई पटेल की तांबे की प्रतिमा ऐसे लग रही थी जैसे कोई महामानव वहां खड़ा होकर सबकुछ देख पा रहा था।

एम वी राव ने कहा, दुनिया की सबसे बड़ी इस प्रतिमा की ऊंचाई 182 मीटर यानी 600 फुट है और ये सरदार सरोवर बांध से तीन किलोमीटर की दूरी पर बनाई गई है। पूरी तरह से लोहे की बनी लौह पुरुष की इस प्रतिमा का बाहरी आवरण तांबे का बना है। प्रतिमा के लिए लोहा देशभर के किसानों-मजदूरों से एकत्रित किया गया है।'' पेशे से इंजीनियर पर अब एक गाइड की भूमिका में एमवी राव ने स्टेच्यू आफ यूनिटी से जुड़ी हर बारीक जानकारी जुटा ली है और एक पेशेवर गाइड की तरह ही वो मुझे इससे अवगत करवा रहे थे।

अपनी दी गई जानकारी के बावजूद मेरे चेहरे पर जिज्ञासा के भाव देख एम वी राव ने बोलना जारी रखा, प्रतिमा की कुल ऊंचाई 182 मीटर है। ये दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा है। इसे बाद दुनिया की दूसरी सबसे बडी प्रतिमा चीन में स्प्रिंपग टेम्पल बुद्ध 153 मीटर है। तीसरे नंबर पर जापान की उशीकु दाइबुल्सु 120 मीटर, चौथे नंबर पर अमेरिका की स्टे%यू आफ लिबर्टी 93 मीटर, पांचवे नंबर पर रूस की द मदरलेंड कोल्स 85 मीटर और ब्राजील की क्रादस्ट द रीडीमर 39.6 मीटर लंबी है। हमारी स्टेच्यू आफ यूनिटी दुनिया का रिकॉर्ड हमेशा इसी के नाम रहने की उम्मीद है।''

मूलतः आंध्र प्रदेश के रहने वाले एमवी राव को थोडा आराम देने के लिहाज से अब जनसंपर्क अधिकारी संजय तिवारी ने बोलना शुरू किया, इस 31 अक्टूबर तक केवल प्रवेश स्थल, फूड कोर्ट, एक्सीलेटर, प्रतिमा, प्रतिमा के दिल तक जाने के लिए लिफ्ट का ही काम पूरा होगा, इसके बाद आगामी महीनों में बाकी बचे काम को पूरा कर लिया जाएगा। प्रतिमा का निर्माण साधु बेट पर किया गया है। प्रतिमा का निर्माण क्षेत्र 19000 वर्ग मीटर है और क्षेत्र में इससे पर्यटन का विकास होगा।''

अब एमवी राव हमें जानकारी देने के लिए आगे बढ़ते हुए बोलते हैं, आप ये जो प्रतिमा देख पा रहे हैं इसमें 70 हजार टन सीमेंट, 18500 टन रीइनफोर्समेंट स्टील, 6000 टन स्ट्रक्चर स्टील का इस्तेमाल किया गया है। प्रतिमा के बाहरी आवरण में कुल 5050 ब्लॉक लगाए गए हैं और पिछले चार साल से करीबन पांच हजार मजदूर यहां काम कर रहे हैं। प्रतिमा में लगाए एक धातु का ब्लॉक छोटे से छोटा एक मीटर का है और बड़े से बड़ा 10 मीटर का है।''

आपको यहां बताना जरूरी होगा कि स्टेच्यू आफ यूनिटी के स्वरूप और इसके निर्माण की कहानी भी बहुत अनोखी है। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के निर्माण में पांच साल (60 महीने) का वक्त लगा है। ये सबसे कम समय में बनने वाली यह दुनिया की पहली प्रतिमा है। प्रतिमा का निर्माण भूकंपरोधी तकनीक से किया गया है। इसे इस तरह से डिजाइन किया गया है कि 6.5 की तीव्रता का भूकंप और 220 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली हवाओं का भी इस पर कोई असर नहीं होगा। मैंने पूछा, जो लोहा पूरे देश से इक्ट्ठा किया गया था उसका क्या हुआ? इस पर राव ने कहा कि वह दूसरे सभी निर्माण कार्यो में इस्तेमाल हो रहा है।

इस प्रतिमा को बनाने वाले शिल्पकार पद्मश्री राम सुथार और उनके बेटे अनिल सुथार का भी बड़ा योगदान है। शिल्पकार राम सुथार प्रतिमा निर्माण के दौरान भी लगातार यहां आते रहे हैं। काफी इंजीनियर के मोबाइल में उनके साथ लिए गए फोटो भी हैं। बुजुर्ग होने के बावजूद निर्माण स्थल पर उनकी सक्रियता सबको प्रेरणा से भर देती थी। बातचीत के दौरान ही शाम के सात बज गए थे और प्रतिमा के ठीक पीछे लालिमा के साथ सूरज को डूबता देखना अपने आप में अनोखा और अछुत अनुभव था। एमवी राव

ने बताया कि स्टेचू ऑफ यूनिटी के चारों ओर अदभुत लाइटिंग की गई है । एक दूसरे इंजीनियर शंकर ने बताया कि, अभी जो काम आप देख पा रहे हैं, वह पहले चरण का काम है, दूसरा चरण 31 के बाद शुरू होगा। उद्घाटन के साथ ही पर्यटक देश में ही बनी दो हाईपावर लिफ्ट के साथ 32 सेंकड में 132 मीटर की ऊंचाई पर स्थित गैलरी में जा सकते हैं। यहां 200 लोग एक साथ सरोवर बांध के अलावा नर्मदा के 17 किमी लंबे तट पर फैली फूलों की घाटी का मनोरम नजारा देख सकते हैं। करीब दो किलोमीटर में फैली फूलों की घाटी में 36 प्रकार के फूल हर मौसम में खिले रहते। स्टेच्यू आफ यूनिटी सरदार सरोवर बांध से डेढ गुणा ऊंचा है। इसकी ैलरी से बांध और तालाब भी दिखाई देंगे।''

अब इंजीनियर शंकर ने हमें प्रतिमा के नीचे बने प्रदर्शनी हॉल में ले जाकर बताया, अब आप प्रतिमा के ठीक नीचे बनाए जा रहे प्रदर्शनी हॉल में हैं। यहां आकर पर्यटक न केवल सरकार वल्लभ भाई पटेल के जीवन से रूबरू होंगे बल्कि तकनीक के साथ उन्हें बहुत सारे दूसरे अनुभव भी करवाए जाएंगे। यहां एक डिजिटल साइनबोर्ड होगा, जिसमें प्रतिमा के निर्माण में लगे हर एक व्यक्ति का बॉयोमीट्रिक ब्यौरा दर्ज होगा। देश व दुनिया के पयर्टक सिर्फ एक क्लिक पर यह जान सकेंगे कि उनके यहां का कौन इंसान प्रतिमा निर्माण में सहयोगी रहा। जैसे अगर आप पंजाब लिखेंगे तो पंजाब के सारे नाम फोटो व डटेल के साथ स्क्रीन पर हेांगे। इसके साथ ही यहां मेकिंग आफ स्टेच्यू नाम से एक फिल्म भी दिखाई जाएगी जिसमें ये जानकारी होगी कि दुनिया की इस सबसे बड़ी प्रतिमा का निर्माण किस तरह किया गया।'' इतना सबकुछ देखने के बाद घड़ी की सुइयां वापस बडोदरा लौटने की तरफ इशारा कर चुकी थी। रास्ते में एक बार फिर गाड़ी रूकवाकर दुनिया की सबसे बड़ी प्रतिमा सरदार वल्लभ भाई पटेल को जीभरकर देखा। कुछ इतिहास अपने आप बनते हैं और कुछ बनाए जाते हैं । ये बनाया गया है, गढा गया है। मजबूत इच्छाशक्ति, राजनीतिक दृढता, बेमेमिसाल मूर्तिकला, आधुनिक इंजीनियरिंग और सरदार वल्लभ भाई पटेल के प्रति देश के प्रत्येक नागरिक के प्रेम का इतिहास केवड़िया जाकर 182 मीटर प्रतिमा को देखते ही चिरस्थाई रूप से यादों में बस जाता है और इस तरह सरदार पटेल से हमारी मुलाकात हुई।

मेट्रो के साथ दौड़ेगा राजा नाहर सिंह का नाम

रवींद्र सिंह राठी

राष्ट्रीय राजमार्ग पर नवनिर्मित बल्लभगढ़ मेट्रो स्टेशन का नाम 1857 की क्रांति के अग्रणी पंक्ति के योद्धा राजा नाहर सिंह के नाम पर रखा गया है और इसका उद्घाटन 19 नवंबर को हा गया। मेट्रो स्टेशन पर राजा की घोड़े पर सवार पेटिंग लगा कर स्टेशन को शोभायमान किया गया है। इसी के साथ बल्लभगढ़ से दिल्ली तक मेट्रो का सफर आसान हो गया है। अब मुजेसर के बाद बने दो नए स्टेशन संत सूरदास (सिही) मेट्रो स्टेशन और बल्लभगढ़ में राजा नाहर सिंह मेट्रो स्टेशन से मेट्रो का संचालन सोमवार 19 नवंबर से शुरू हो गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गुरुग्राम से रिमोट कंट्रोल के माध्यम से मेट्रो का विधिवत उद्घाटन किया। वर्तमान में हरियाणा में 25.8 किलोमीटर मेट्रो लाइनें संचालित हैं और इस भाग के शुरू होने के बाद यह लम्बाई 29 किलोमीटर हो जाएगी। एसकॉर्ट मुजेसर-राजा नाहर सिंह मेट्रो स्टेशन तक 3.2 किलोमीटर लंबा कॉरिडोर बनाया गया है। इस विस्तार के बाद कश्मीरी गेट से राजा नाहर सिंह मेट्रो स्टेशन तक पूरा कॉरीडोर 46.6 किलोमीटर लंबा हो गया है। गुरूग्राम, फरीदाबाद और बहादुरगढ़ के बाद मेट्रो से जुड़ने वाला बल्लभगढ़ हरियाणा का चौथा शहर है। मेट्रो की वायलट लाइन पर संत सूरदास (सिही) और राजा नाहर सिंह के नाम से दो स्टेशनों का विस्तार हुआ है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 19 नवंबर को गुरुग्राम के सुल्तानपुर में आयोजित कार्यक्रम में बटन दबा कर इन मेट्रो स्टेशनों का शुभारंभ किया आरंभ किया। उद्घाटन कार्यक्रम देखने के लिए बल्लभगढ़ राजा नाहर सिंह स्टेशन के ऊपर दो एलइडी स्क्रीन लगाई गई थी और प्रधानमंत्री ने जैसे ही उद्घाटन किया उसी समय मेट्रो बल्लभगढ़ स्टेशन से 300 लोगों को लेकर मुजेसर स्टेशन तक रवाना हो गई।

राजा नाहर सिंह मेट्रो स्टेशन के 300 मीटर दायरे में लोगों को कई सुविधाएं एक साथ मिलेंगी। स्टेशन के सामने ही राजा नाहर सिंह बस अड्डा है तो पास ही बल्लभगढ़ रेलवे स्टेशन भी। बल्लभगढ़ का मुख्य बाजार और नेशनल हाइवे भी मेट्रो स्टेशन के बहुत ही करीब हैं। यात्रियों की सुविधा के लिए मेट्रो स्टेशन परिसर में ही मॉल बनाया जा रहा है। बल्लभगढ़ मेट्रो शुरू होने के बाद लोग बल्लभगढ़ से बदरपुर बॉर्डर तक 40 रुपए में पहुंच सकेंगे। राजा नाहर सिंह मेट्रो स्टेशन से एस्कॉर्ट्स मुजेसर मेट्रो स्टेशन तक आने के लिए लोगों को 20 रुपए देना होगा। वहीं संत सूरदास मेट्रो स्टेशन से भी बदरपुर बॉर्डर तक 40 रुपए किराया लगता है। बहादुरगढ़, कश्मीरी गेट, सेंट्रल सचिवालय आदि स्थानों का 60 रुपए होगा। दोनों जगह चार-चार मशीन रखी गई हैं। राजा नाहर सिंह स्टेशन पर एक सभा का भी आयोजन किया गया, जिसमें शहर के गणमान्य लोग और वीवीआइपी व वीआइपी तथा अधिकारी शामिल हुए।

राजा नाहर सिंह की वीरता से कांपते थे अंग्रेज: बता दें कि राजा की वीरता से परिपूर्ण इतिहास किसी से छुपा नहीं है। राजा नाहर सिंह ने अंग्रेजों के खिलाफ 1857 की क्रांति के दौरान अंतिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर का साथ दिया था। अंग्रेज राजा नाहर सिंह की बहादुरी के किस्से सुन कर उनके नाम से ही कांपते थे। अग्रेजों ने सोचा कि जब तक राजा नाहर सिंह को गिरफ्तार नहीं किया जाएगा।

तब तक लालकिले पर कब्जा करना मुश्किल है। अंग्रेजों ने बल्लभगढ़ आकर राजा नाहर सिंह से कहा कि वे बहादुरशाह जफर से संधि करना चाहते हैं, लेकिन बादशाह ने एक शर्त रखी है कि संधि के दौरान राजा नाहर सिंह का मौजूद होना जरूरी है। अंग्रेजों पर विश्वास करके उनके साथ दिल्ली चले गए। उन्हें दिल्ली लालकिले में प्रवेश

हम आजाद तभी पाते हैं, जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते हैं। – रवीन्द्रनाथ टैगोर

करते ही बंदी बना लिया और 9 जनवरी 1858 को लालकुआं पर फांसी के फंदे पर लटका दिया। मेट्रो स्टेशन का नाम राजा नाहर सिंह के नाम पर रखे जाने से हमारी आने वाली पीढियों को राजा नाहर सिंह के बारे में जानने की प्रेणा मिलेगी। गौरतलब है कि 14 सितंबर को हरियाणा सरकार ने प्रदेश के पांच मेट्रो स्टेशनों के नाम बदलने की घोषणा की थी, जिन्हें राजा नाहर सिंह के नाम से ये मेट्रो स्टेशन भी शामिल था।? इन स्टेशनों का नाम बदलने के लिए वित्त मंत्री कैप्टन अभिमन्यु ने सीएम को पत्र भी लिखकर व्यक्तिगत प्रयास किए थे और उहोंने दिल्ली मेट्रो प्रमुख मंगू राम से मुलाकात कर इसमें सहयोग करने का आग्रह किया था। इसके बाद ये प्रयास सिरे चढे और पांचों स्टेशनों का नाम बदलने के लिए जिला स्तर पर समिति गठित की थी। समिति की रिपोर्ट आने के बाद स्टेशनों के नाम बदले गए हैं। ल्लभगढ़ मेट्रो स्टेशन का नया नाम अमर शहीद राजा नाहर सिंह मेट्रो स्टेशन होगा। बल्लभगढ़ मेट्रो लाइन पर स्थित एमसीबी कालोनी स्टेशन का नाम भक्तिकाल के महान संत एवं कृष्ण उपासक संत सूरदास के नाम पर रखा गया है। बहादुरगढ़ मेट्रो लाइन पर स्थित एमआईई मेट्रो स्टेशन का नाम पंडित श्रीराम शर्मा, सिटी पार्क मेट्रो स्टेशन का नाम ब्रिगेडियर होशियार सिंह मेट्रो स्टेशन और बस स्टैंड स्टेशन का नाम बहादुरगढ़ सिटी स्टेशन रखा गया है।

लेन चहत हौं दिल्ली-आगरा, घर की थून दई?

डॉ० धर्मचन्द्र विद्यालंकार

हमारी अपनी ही इन पंक्तियों से मैं इस लेख का श्री गणेश ऐसे करता हूँ-

''किसी को खेलना ना आया तो किसी को ना मैदान मिला।
किसी को पंख ना मिले, तो किसी को न खुला आसमान मिला।''

इतिहास में हम कई बार ऐसा देखते हैं कि कितने ही लोगों को उचित अवसर अग्रगमन के लिए मिले थे लेकिन वे उनका उचित लाभ नहीं उठा सके, और बहुत-से लोग दूर क्षितिज तक जाना चाहते थे लेकिन उतना अवसर और अवकाश उनको न मिला। विशेषकर हम इस बात को अपने कृषक वर्गीय जननायकों के जीवन-संदर्भों से जोडकर देखना और समझना चाहेंगें। क्योंकि यही सबसे बड़ा और उत्पादक वर्ग है और राष्ट्रीय स्तर पर यही सुसंगठित कभी नहीं रहा है। जब भी इस अजगर ने शेषनाग बनकर करवट बदली है, तभी भारतीय राजनीतिक भूगोल में इसने भूकम्प उठा दिया है।

सर्वप्रथम हम संयुक्त-पंजाब का ही परिदृश्य उठाकर देख सकते हैं। वहीं पर तीस के दशक में सर्वप्रथम किसान-एकता कायम हुई थी। जिसमें हिन्दू-मुस्लिम और सिख तीनों ही धर्मों एवं सम्प्रदायों के किसान अपने आर्थिक हित-लाभों के आधार पर दीनबन्धु चौ० छोटूराम और सर फजले हुसैन के नेतृत्व में सुसंगठित हुए थे। इसीलिए १९२३ ई० में ही वायसराय की विधान-परिषद् में उनकी यूनियननिष्ठ पार्टी अथवा जमींदारा लीग को बहुमत मिल गया था। उस दासता और पराधीनता के काल में भी उन दोनों ही किसान-केसरियों ने अनेक कृषक हितकारी कार्य-कलाप किये थे। तभी 'जरई-अराजी एक्ट' जैसे कृषक हितकारी नियम-विधान का क्रियान्वयन कराया था जोकि कृषीतर वर्ग के लोगों के हाथों में किसानों की कृषि-भूमि के हस्तातंरण में बाधक ही था।

अतएव महाजन-सूदखोरों के हाथों कंगाल बने हुए किसानों की धरती-माता कर्ज के एवज में बय होने से बच गई थी। बल्कि संयुक्त पंजाब में इसी काननू के प्रभावी क्रियान्वयन को ही किसान और गैर किसान वर्गों के राजनीतिक आधार पर अलगाव या विभाजन का भी कारण श्री कृष्णचन्द्र दहिया जैसे इतिहासकार मानते हैं। क्योंकि शहरी सवर्ण चाहे वे हिन्दू थे, या सिख; या फिर मुस्लिम-शेख और सैय्यद- वे इस किसानों के कवच रूपी उस कानून के कार्यपालन के घोर विरोधी थे। संयुक्त पंजाब के शहरी हिन्दू सवर्ण हिन्दू महासभा के पुण्य प्रभाव से हिन्दू मात्र की अबाध एकता के तो अनन्य अलम्बरदार थे; लेकिन जहाँ पर उनके अजस्र उपलब्ध आर्थिक हितों में या वर्ग-स्वार्थों की सिद्धि में कहीं पर भी रुकावट या शिथिलता आती थी तो वहीं पर वे बजाय अपने हिन्दू किसानों के मुस्लिम और सिख-सूदखोरों और महाजन शोषकों के ही साथ खड़े मिलते थे। तब सारा हिन्दूत्व कहाँ काफूर हो जाता था?

संयोग से एक बार राष्ट्रीय हिन्दू महासभा के अध्यक्ष पं० मदनमोहन मालवीय जब संयुक्त पंजाब में हिन्दू-एकता के लिए आये हुए थे तो सवर्ण शहरी नेताओं जिनमें ला० गोकुलचन्द नारंग और राजा नरेन्द्रनाथ बख्शी जैसे लोग अग्रणी थे; उन्होंने चौ० छोटूराम को पंजाब में 'हिन्दू-एकता' का सबल बाधक बताकर उनके सम्मुख शिकायत की थी। जब पं० जी ने इस विषय में चौ० साहब से स्पष्टीकरण मांगा था तो उन्होंने यही उत्तर दिया था कि ''वैसे तो ये शहरी सवर्ण हिन्दू-एकता की हिमायत करते हैं लेकिन जब भी उनके आर्थिक हित-लाभों की बात आती है, तो वहाँ पर इन्हें अपने वर्गीय स्वार्थ ही बस क्यों सुहाते हैं।'' पं० जी यह सुनकर शान्त हो रहे थे क्योंकि स्वयं उनके अपने व्यक्तित्व में भी यही अर्न्तविरोध था। इसीलिए उन्होंने १९१९ ई० में अमृतसर जलियाँवाला कांग्रेस की कार्यसमिति में बिजौलिया के किसानों की आवाज को कहाँ उठने दिया। अतएव 'हाथी के दाँत खाने के और तथा दिखाने के और' ही होते हैं।

इसी प्रकार से जब श्री विश्वनाथ प्रताप सिँह ने 'मण्ड़ल-आयोग' की अनुशँसाओं का क्रियान्वयन नहीं किया था, तब तक बनारस के ब्राह्मणों/पण्डितों का नारा था- ''ये राजा नहीं फकीर है- भारत की तकदीर है।''

और जैसे ही प्रधानमंत्री बनकर उन्होंने चौ० चरणसिँह द्वारा गठित मण्ड़ल-आयोग की अनुशंसाओं के क्रियान्वयन के लिए अध्यादेश पारित किया था तो सारा ही सवर्ण समाज उन्हीं वी.पी.सिँह को जयचन्द और मीर-जाफर की देशद्रोही संतान बताने लगा था।

फिर भी हमें उन लोगों से कोई किसी प्रकार की शिकवा-शिकायत नहीं है, क्योंकि वे लोग तो अपने वर्ग-हितों के ही सजग प्रहरी हैं। बाहर से भले ही वे देश और धर्म की बातें करेंगें

किसी चीज से प्रभावित न होना ही मुक्ति है। – स्वामी विवेकानंद

लेकिन जैसे ही कहीं पर उनके वर्ग स्वार्थ-साधन में अवरोध उत्पन्न होगा तो वे उसका मुखर भाव से वे सबल विरोध ही करते हैं। वर्तमान में भी अनुसूचित जनजाति-वर्गों के पक्ष में जो निर्णय केन्द्रीय सरकार ने किया है, उसके प्रति सवर्ण स्वामियों की प्रखर प्रतिक्रिया आप लोग स्वयं ही देख सकते हैं। जब तक भाजपा हिन्दू-हित और देश-हित का राग अलापती है तो वहीं तक वह उनकी अपनी अकेली प्रखर प्रतिनिधि है, राष्ट्रीय राजनीति में, और जैसे ही उसने उच्चतम न्यायालय के निर्णयों को बदला है तो वह खलनायक बनती चली जा रही है, उनकी दिव्य दृष्टि में। क्या शाहबानो का इतिहास आज स्वयं को एक बार फिर से नहीं दोहरा रहा है?

यही स्थिति संयुक्त पंजाब और उत्तरप्रदेश तथा राजस्थान और हरयाणा में भी रही है। जहाँ भी कृषक नायकों ने उन्हें कृषक वर्ग के लिए जब भी कोई क्रांतिकारी अथवा परिवर्तनकारी कार्यक्रम बनया या क्रियान्वित किया है; सवर्ण समाज की प्रतिक्रिया प्रतिगामी ही रही है। उत्तर प्रदेश में राजस्व मंत्री रहते हुए चाहे चौ० चरणसिँह द्वारा 'भू-परिसीमन' के क्रांतिकारी कानून का क्रियान्वयन रहा हो; या फिर चकबन्दी का राष्ट्रीय कार्यक्रम। वे उसके अनवरत भाव से विरोध में खड़े थे। हालांकि हमें यह भी सहज भाव से स्वीकारना चाहिए कि यदि पं० जवाहर लाल नेहरू जैसा आधुनिक और प्रगतिशील प्रधानमंत्री न मिला होता तो राष्ट्रीय स्तर पर वे क्रांतिकामी और प्रगतिपरक भूमि-सुधार जैसे कार्यक्रम कदापि धरातल पर क्रियान्वित ही नहीं होते और न ही सामन्ती समाजिक संबंधों की ही विदाई होती।

फिर भी हमें अन्य वर्गों से उतनी शिकायत कहाँ है जितनी की अपने ही कृषक-केहरियों से है। यदि कभी चौ० छोटूराम को बजाय पंजाब के अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का व्यापक मंच मिल जाता तो क्या वे केवल पंजाब के एक प्रादेशिक जननायक ही बनकर रह जाते। यदि वे नेहरू के नेतृत्व वाली कांग्रेस में १९३० या १९४०-४१ ई० तक भी जुड जाते तो वे राष्ट्रीय स्तर के महानायक ही होते। सरदार पटेल का जनाधार भी तो आखिर वही था जोकि उनका किसान वर्ग था। केवल प्रादेशिक और राष्ट्रीय मंचों पर बैठने का ही तो फर्क था। वरना तो चौ० साहब भी उतने ही कार्य-कुशल और दृढसंकल्पी थे।

इसी प्रकार से चौ० चरणसिँह जी ने १९३७ ई० से लेकर १९७७ ई०तक अपने जीवन के बहुमूल्य ४० वर्ष अकेले उत्तरप्रदेश की राजनीति में ही व्यर्थ गंवा दिए। जबकि पं० गोबिन्द बल्लभ पन्त की मृत्यु के पश्चात श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने उन्हें केन्द्र में गृहमन्त्री बनाने के लिए आहूत किया था। यह सन् ७० के दशक के मध्य की ही बात थी। यदि उस समय चौ० साहब केन्द्र में गृहमंत्री या कृषि-मंत्री ही बनकर आ जाते तो वे निश्चित ही भारत भर में किसानों के सिरमौर और हृदयहार होते। तब केन्द्रीय राजनीति में उनके पाँव अंगद की भाँति गहरे जम जाते। उत्तर प्रदेश में भले ही इन्दिरा-कांग्रेस के साथ गठबन्धन करके वे संविद सरकार में भी सहयोगी बने रह सकते थे। लेकिन दुविधा में दोनों गये- 'माला मिली न राम।'

यही क्यों, श्रीमती इन्दिरगाँधी जैसी क्रान्तिकारी महिला प्रधानमंत्री के 'बैंकों के राष्ट्रीयकरण और राजाओं के वजीफों की समाप्ति' जैसे प्रगतिशील कार्यक्रमों में भी सक्रिय सहयोगी बनकर वे अपनी छवि को एक प्रगतिशील राष्ट्रीय-नायक की बना पाते। बजाय राजाओं के प्रिवीपर्स का समर्थन करके एक कुलक-किसान की बनाने के। केवल इसी एक कालबाह्य विधि-विधान के पक्ष में मतदान करने के कारण अपनी यू.पी. की सरकार का अकाल-पतन भी उन्होंने कराया। दूसरी बार श्री सत्यपाल मलिक के माध्यम से १९६९ ई० के दशक में उनको एक बार पुनः अवसर मिला था केन्द्र में आने का जबकि राष्ट्रीय कांग्रेस दो ध ड़ों में बँटी हुई थी। श्रीमति इन्दिरा गाँधी की सरकार अल्पमत में थी- उस उपयुक्त अवसर का भी लाभ चौ० साहब ने नहीं उठाया था।

जब जनता पार्टी की सरकार बनने पर १९७७ ई० में केन्द्रीय सरकार में वे गृहमंत्री बनकर आये तो उ०प्र० में एक निर्बल और निराधार रामनरेश यादव जैसे व्यक्ति को वहाँ की राजगद्दी सौंप दी। जबकि चौ० राजेन्द्र सिँह और प्रो० कैलाशनाथ यादव जैसे मजबूत और उनके अनन्य अनुयायी विधायक व्यक्ति वहाँ पर थे। इसी प्रकार से चौ० देवीलाल जी ने जनमोर्चे की सरकार में ऐसी ही भयंकर भूलें की। जब फरीदाबाद के राजा नाहरसिँह स्टेडियम में चुनाव से पूर्व जनमोर्चे के साथ जनता-पार्टी का विलय हुआ था तो उस और जनतादल का गठन हुआ था तो उस अवसर पर यह तय हुआ था कि श्री वी.पी.सिँह प्रधानमंत्री होंगें, अगली सरकार में। तो चौ० देवीलाल उपप्रधानमंत्री होंगें और चौ० अजीतसिँह गृहमंत्री होंगें तथा मधुदण्ड़वते वित्तमंत्री होंगें। लेकिन जब चौ० अजीतसिँह को गृहमंत्री बनने का अवसर मिल रहा तो चौ० देवीलाल ने उनको यह कहकर उस अवसर से वंचित कर दिया था 'वे उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री बनेंगें।' लेकिन जब वह उत्तम अवसर आया तो वहाँ पर भी उनकी सहायता नहीं की। बजाय श्री मुलायम सिंह को ही अपना पिछलग्गू बनाय रखने के लिए लखनऊ की गद्दी संभलवा दी। यहाँ पर किसी उर्दू के कवि की ये पंक्तियाँ कितनी संदर्भ-सापेक्ष हैं-

''हमें तो अपनों ने मारा है, दूसरों में कहाँ दम था,
नाव वहीं पर डूबी जहाँ पर पानी काफी कम था।''
- 卐 - 卐 - 卐 - 卐 - 卐 - 卐 - 卐 - 卐 -
जिन्हें हम हार समझे थे, गला अपना सजाने को,
वही तब नाग बन बैठे, हमें ही काट खाने को।''

फिर अकेला उ०प्र० ही क्यों, साथ में लुभाव में विहार जैसा महाप्रदेश भी उन्हों उन्हीं अहीर-यादवों को सौंप दिया। जबकि श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह वहाँ पर श्यामसुन्दर दास जैसे दलित नेता को मुख्यमंत्री देखना चाहते थे तो श्री चन्द्रशेखर श्री रामधन के पक्ष में थे तो चौ० अजीत सिंह युवा-तुर्क रामविलास पासवान के पक्ष में थे। इन सब लोगों की नीति और नीयत यही थी कि जनतादल के साथ किसान और मजदूर या दलित वर्ग भी सत्ता में सहभागी हों। लेकिन चौ० देवीलाल के अतिरिक्त किसान या प्रकारान्तर अहीर राज के आग्रह ने सब कुछ गुड-गोबर कर दिया। अपनी जाति के लोगों के तो वे सारे हाथ-पाँव बाँध रहे थे, वैसे आप सारे अन्य किसानों के अलम्बरदार बने हुए थे। एक ब्रज के कवि ने भरतपुर राज-परिवार की फूट पर कभी कहा था-

''बंधु वैर अनबन के कारण कैसी कुमति भई लेन, चहत हों दिल्ली-आगरा घर की थून गई।''

यहाँ पर यह भी ज्ञातव्य है कि जिस समय १९७७ ई0 में जनता पार्टी का गठन हुआ था तो उसके दोनों मुख्य घटकों लोकदल और जनसंघ को चार-चार प्रान्त अपनी-अपनी सरकारें बनाने को मिले थे। जनसंघ बजाय राजस्थान के उससे छोटे प्रान्त हरयाणा को डॉ0 मंगलसेन के लिए मांग रही थी। तब चौ0 चरणसिंह ने हरयाणा से चारगुणा अधिक आबादी वाले राजस्थान का त्याग करके केवल चौ0 देवीलाल को सत्ताशीर्ष पर बिठाने के लिए ही हरयाणा का चयन किया था। लेकिन कैसी विचित्र विडम्बना है राजनीति की बाद में अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा और घनघोर परिवारवाद के चलते उसी महानायक ने इतना भी अपनी विशाल और उदार-हृदयता नहीं दिखाई कि चौ0 चरणसिँह के सुपुत्र को वे भी लखनऊ में सत्तारूढ़ करके कम-से-कम उस उधार को ही चुका देते। किसी शायर ने कहा भी है-

''रकबा तुम्हारे गाँव का मीलों हुआ तो क्या,
रकबा तुम्हारे जिगर का दो ईंच भी नहीं।''

ऐसा नहीं है कि यह परिवारवाद या व्यक्तिवाद की बीमारी अकेले जाट-किसानों में ही है। इनमें तो यह हरयाणा से लेकर पंजाब और राजस्थान तक व्याप्त है। प्रकाश सिंह बादल ने श्री इन्द्रकुमार गुजराल को तो प्रधानमंत्री बनवा दिया लेकिन अन्य किसी सिख-जाट किसान-नेता को अपने सिवाय आगे नहीं आने दिया। स्वयं भी पंजाब के गुरुद्वारों की ही पंथक राजनीति के ही बंधक बनकर रह गये। वरना सरदार सुरजीत सिँह बरनाला या चौ0 बलराम जाखड जैसे व्यक्ति की पीठ पर वे होते तो क्या वह दिल्ली के स्वर्ण-सिंहासन को सुशोभित नहीं करता? राजस्थान में मिर्धा परिवार और चौ0 कुंभाराम परस्पर में ही उलझते रहे; वरना वहां पर कभी का जाट मुख्यमंत्री बन जाता। वहाँ पर तो वे अब भी प्रिय प्रजा मात्र ही हैं।

केवल जाटों में ही नहीं, अपने अर्धसामन्ती वर्ग चरित्र के चलते किसान-केसरियों में परिवारवाद की बीमारी यू.पी. और बिहार तक में व्याप्त है जोकि लाईलाज है। उ0प्र0 में मुलायम सिंह ने किसी अन्य अहीर को भी आगे आने का अवसर नहीं दिया। चाहे वे चन्द्रजीत यादव रहे हों; या सत्यपाल या कैलाशनाथ। इसी प्रकार से बिहार में लालू जी ने भी यही किया यदि वे नव्वे के दशक में ही नीतिश को बिहार सौंप देते तो वी.पी. सिँह के बाद जनतादल के वही सिरमौर होते। यदि मुलायम सिँह लखनऊ चौ0 अजीत सिँह के लिए छोड देते तो जाट इतने कृतघ्न नहीं है कि उन्हें प्रधानमंत्री नहीं बनाते। लेकिन बात वही है कि-

''लम्हों ने खता की है, सदियों ने सजा पाई।''

आज यहाँ पर यह कहना नहीं होगा कि इस कृषक वर्गीय बिखराव का ही तो लाभ मत-पंथ की राजनीति करने वालों को मिला है। जोकि वे दिल्ली के इन्द्रासन पर बैठकर आज आप को आँखें दिखा रहे हैं। तभी यू.पी., बिहार में यदि आज अहीरों की राजनीति हाशिए पर चली गई है तो गुजरात के कुर्मी पटेल अब किनारे पर पड़े हुए हैं। इसी प्रकार से महाराष्ट्र के मराठा भी आज परिधि से दूर हैं। रही जाटों की बात, अकेले पंजाब को छोड़कर वे हरयाणा-उत्तरप्रदेश से राजस्थान और दिल्ली तक में अब राजनीतिक अछूत बनते चले जा रहे हैं। क्योंकि वे स्वयं में भी संगठित कहाँ है। यदि अकेले हरयाणा और उत्तरप्रदेश के जाट-किसान भी एक किसी राजनीतिक दल की छत्रछाया में संगठित हो जाएँ तो शेष मध्य किसान जातियाँ तो स्वत: ही उनका अनुगमन करती रहीं हैं। वही क्यों, बल्कि जिन मुस्लिमों को हमारे भाजपाई धर्मध्वजी दिनरात पानी पी-पीकर कोसते रहे हैं वे तो सदैव ही किसान-केहरियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हैं। चौ0 छोटूराम से चरणसिंह तक का उन्होंने सदैव साथ दिया था। चौ0 चरणसिंह उनके ही बल पर ही गाजियाबाद से मेरठ, मुरादाबाद, बरेली तक जीतते थे।

यदि आज अकेला हरयाणा का चौटाला परिवार चौ0 परिवार चौ0 अजीत सिंह का नेतृत्व स्वीकार करले तो वे एकाएक राष्ट्रीय किसान-नायक बन सकते हैं। क्योंकि महान पिता के पुत्र हैं और महाप्रान्त के व्यक्ति हैं। उधर राजस्थान का किसान वर्ग भी इस समय नेतृत्वहीन हैं। श्री अशोक गहलौत ने वहाँ पर जाट-किसानों को औरों से अलगाकर उनको पहले ही तीन-तेरह कर दिया है। यदि हरयाणा और पश्चिमी उ0प्र0 के जाट-किसान आज भी किसी एक झंडे या नारे या दल के साथ एकजुट हो जायें तो राजस्थान का जाट तो कब का उनकी ओर आशा भरी दृष्टि से निहार रहा है। परन्तु परिवारवादी राजनीति और सामन्ती मनोवृत्ति के चलते ये किसान-केसरी कदापि संगठित नहीं हो सकते। उनका हुक्का-पानी भी अब तो साँझा नहीं है। वे कहाँ दिल्ली और लखनऊ (उ0प्र0) पर शासन करने को दिवास्वप्न देखते थे, कहाँ आज हरयाणा तक भी उनके हाथों से निकल गया है। इसलिए ब्रज के कवि की वह पंक्ति कितनी यहाँ पर प्रासंगिक है-

''बंधु वैर अनबन के कारण कैसी कुमति भई लेन, चहत हों दिल्ली-आगरा घर की थून गई।''

सारा ही कृषक वर्ग आज दिशाहीन और नेतृत्वहीन है। वह आशा भरी दृष्टि से आपकी ओर निहार रहा है। यदि सिँह ही सो जाएगा तो जंगल की रक्षा फिर और कौन करेगा। अन्त में किसी कवि ने क्या ही सुन्दर लिखा है-

''बड़े गौर से सुन रहा था जमाना - तुम्हीं सो गये दास्तां कहते-कहते।''

राजस्थान से लेकर बिहार से उत्तर प्रदेश ही क्यों मध्यप्रदेश और गुजरात से महाराष्ट्र और आन्ध्रप्रदेश एवं तेलंगाना क्या कर्नाटक तक इस मध्यकिसान जातियों के गठजोड़ से निर्मित तीसरे गठबन्धन की आज नितान्त आवश्यकता है। यह कितना बडा रहस्य है कि जहाँ पर भी तीसरा मोर्चा या शक्ति कमजोर हुई हैं, वहीं पर साम्प्रदायिक राजनीति परवान चढी है। क्योंकि राष्ट्रीय कांग्रेस की नीति-रीति से असहमत किसान जातियाँ अपने आप ही पके हुए फलों की भाँति जाकर भाजपा की झोली में चली गई हैं। अतएव इस कृषक एकता का श्रीगणेश हरयाणा और पश्चिमी उ0प्र0 से ही होना चाहिए था और जाटों के ही शेष किसान जातियों का नेतृत्व करना था। कहाँ आज स्वयं चौ0 देवीलाल का परिवार तीन-तेरह हो गया है। (इति)

विचार का चिराग बुझ जाने पर आचार अंधा हो जाता है। –बिनोवा भावे

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Manglik Girl 27/5'6" M.A. Sociology (Gold Medal list) from PU. Net clear and purshing Ph.D. Father Haryana Government officer, Mother House Wife. Manglik officer Puncofed. Gotra : Gill, Nandal, Barun. Cont.: 9239515119
- SM4 Jat Girl (03.10.1992) 5'5" MSc, CTET, HTET. Gotra : Gahalyan, Chhikara, Bura. Cont.: 9467630182
- SM4 Jat Girl (19-10-89) 5'6" B.Tech, MBA, Project engineer, Gotra: Dabas, Lahore, Khatri, Mob.: 9818579670
- SM4 Jat Girl (23-07-90) 5'3" M.Com,B.Ed, Astt. manager union bank of india, Cont.: 8171948891
- SM4 Jat Girl (16-06-92) 5'0" D.ed (JBT) BA, Warking Satluj public school sec 2 pkl, Gotra: NAIDU,NAIN, Cont.: 9417339842
- SM4 Jat Girl (25-09-88) 5'8" MBBS, MD, Medical Doctor, Gotra: SUHAG, SANGWAN, AHLAWAT. Cont.: 9416896043
- SM4 Jat Girl (9/12/1992) 5'7" MBBS, Doing MS. Gotra: Dhanker, kadion, balhara, Cont.: 9466010011
- SM4 Jat Girl (11/1/1992) 5'3" B.D.S, MBA student.Gotra: Ahlawat, dhankher, gulia, hooda, Cont.: 9417249719
- SM4 Jat Girl (25-08-91) 5'3" B-Tech, UT Secretariat (UDC), Gotra: Kadian, sangwan, ahlawat, Cont.: 9992333202, 8587000000
- SM4 Jat Girl (3/9/1991) 5'5" B.Tech working in Accenture Solutions, Manesar (GGN) Gotra: Bisla, dhillon, malik, mann, chahal, Cont. 9417391563
- SM4 Jat Girl (15-04-93) 5'3" BA, B.ed, CTET, HTET. Gotra: PANGAL , DAHIYA, SANDHU, RATHI, Cont.: 9255431810
- SM4 Jat Girl (24-02-91) 5'4" MCA working in Yes bank, Gotra : Chahal, khubber, gulia, Cont.: 9992500984
- SM4 Jat Girl (30-Jul-92) 5'1" MBA,B Tech, diploma. Gotra: Godara,kundu, Janghu, Cont.: 9728588691
- SM4 Jat Girl (12/8/1988) 5'4", BBA,POST GRADUATE, working as a DUPTY MANGER in YES BANK, Gotra: PHOGAT, MALIK, Cont.: 9358401779, 9997600000
- SM4 Jat Girl (3/2/1990) 5'1" M.COM Gotra: DANGI, DHAMA, Cont.: 9873137917
- SM4 Jat Girl (24-11-90) 5'4" DOING PH.D, Gotra: RATHI, PANJETA, NEHARA, Cont.: 9991098915, 7015000000
- SM4 Jat Girl (4/12/1990) 5'2" MCA Working in MHC at Mohali, Gotra: GULIA, MALHAN, DALAL, Cont.: 9780385939
- SM4 Jat Girl (12/11/1987) 5'3" B.COM, M.COM, B.ed working Teaching at Rohtak, Gotra: Dager, kharab, suhag, Cont.: 99888617961
- SM4 Jat Girl (18-12-90) MA, Gotra: REDHU, PUNIA, BENIWAL, Cont.: 818892668
- SM4 Jat Girl (13-06-94) 5'5" B.SC, M.SC, B.Ed, Gotra: KHOKHAR, DAHIYA, SIWACH, RANDHAWA, Cont.: 9813209733
- SM4 Jat Girl (18-12-89) 5'5" BE in information science, Gotra: SUHAG, RANA, Cont.: 9880788992
- SM4 Jat Girl (14-03-88) 5'6" M.A, B.Ed, Gotra: Inania, Gadhwal, Maila, Pilania, Cont.: 9466178093
- SM4 Jat Girl (12/1/1988) 5'8" M.Phill & M.Sc, Guest Lecturer in college New Delhi, Gotra: Rathi Malik, Cont.: 9654326146
- SM4 Jat Girl (14-09-88) 5'3" LLB, LLM, PHD, Research, Associate in NLU Delhi, Gotra: Sangwan, Gahlian, Cont.: 9810212200
- SM4 Jat Girl (27-01-89) 5'3" B.Tech CSC, Senior Software Engineer, Gotra: Ahlawat, Baliyan, Cont.: 9717638314, 9971993557
- SM4 Jat Girl (09.03.1989) 5'4" BA and PGDCA, working Clerk in Haryana Civil Court, Gotra: Chahal, Sheokand, Dhull, Cont.: 9468407521
- SM4 Jat Girl (29.03.1990) 5'2" M.A. English, B.Ed. Working in Agriculture, Gotra: Kaliraman, Kadian, Punia, Gotra: 8168693593
- SM4 Jat Girl (19.07.1990) 5'4" M.A., M.Phil. PHD. NET, CTET, HTET working Private Instructor, Gotra: Duhan, Sehrawat, Kundu, Cont.: 9416620245
- SM4 Jat Girl (25.11.1992) 5'2" M.Com., Adhoc employee at Haryana Electricity Board, Gotra: Pawar, Dahiya, Pilania, Cont.: 9417723184
- SM4 Jat Girl (18.08.1988) 5'4", M.Sc. Math, B.Ed. M.Ed. working Teacher in Private School, Gotra: Bankura, Maan, Narwal, Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Girl (24.05.1992) 5'6" B.Tech, MBA Manager at Alliances Gurugram, Gotra: Dahiya, Kharab, Khokhar, Cont.: 8729000190
- SM4 Jat Girl (26.07.1995) 5'3" GNM, Post Basic B.Sc. Nursing, Govt. Service, Gotra: Chhikara, Saroha, Malik, Dahiya, Cont.: 9818536146
- SM4 Jat Girl (03.10.1992) 5'5" M.Sc. B.Ed. CTET, HTET, Govt. Service, Gotra: Ghlayan, Chhikara, Bura, Khatkar, Cont.: 9467630182
- SM4 Jat Girl (05.01.1998) 5'6" B.Sc. Non medical, Govt. Service, Gotra: Kaliraman, Panghal,Punia, Sihag, Cont.: 9992394448
- SM4 Jat Girl (05.02.1989) 5'1" B.Com, MBS, LLB, Practice in High Court, Chandigarh, Gotra: Phogat, Tomar, Sangwan, Kadiyan, Cont.: 8929622456
- SM4 Jat Girl (07.01.1991) 5'4" B.A. GNM, Teacher in Private School, Gotra: Bankura, Maan, Narwal, Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Girl (04.09.1990) 5'4" BBA, MBA, PGDM, Gotra: Sunda, Bhadu, Dhaka, Dudi, Cont.: 9417839579
- SM4 Jat Girl (17.09.1995) 5'4" M.Com, B.Ed, Gotra: Chahal, Sheokand, Moga, Dhull, Cont.: 9468407521
- SM4 Jat Girl (23.07.1990) 4'5" B.Tech. M.Sc. From USA, Software Engineer in USA, Gotra: Sindhu, Malik, Deswal, Gahlawat, Cont.: 9416160789
- SM4 Jat Girl (02.10.1980) 5'4" M.Sc. M.Phil. B.Ed, Junior Lecturer in Haryana Govt., Gotra: Nandal, Sehrawat, Dalal, Cont.: 8059220808
- SM4 Jat Girl (14.03.1988) 5'6", MA Geography, Pol. Sc., B.Ed., Gotra: Inaniya, Gadhwal, Malia, Pilania, Cont.: 9466178093
- SM4 Jat Girl (12.01.1988) 5'8", M.Sc. M.Phil, PHD, Guest Lecturer in Delhi, Gotra: Rathee, Malik, Cont.: 9654326146
- SM4 Jat Girl (14.09.1988) 5'3" LLB, LLM, Ph.D. Research Associate NLU, Delhi, Gotra: Sangwan, Ghalyan, Cont.: 9810212200
- SM4 Jat Girl (27.01.1989) 5'3" B.Tech. Software Engineer in Dell, Noida, Gotra: Ahlawat, Balyan, Cont.: 9717638314
- SM4 Jat Girl (23.03.1991) 5'4" M.Tech. Ph.D, Gotra: Dhillon,
- SM4 Jat Girl (16.06.1993) 5'3" B.Tech. MBA, Working Sr. Engineer in MNC Gurugram, Gotra: Godara, Janghu, Kundu, Cont.: 9728588691
- SM4 Jat Girl (13.02.1994) 5'5" B.A., LLB, Gotra: Sandhu, Ledhra, Mandhan, Cont.: 7888785519
- SM4 Jat Girl (13.10.1991) 5'5" LLM Pursuing Ph.D , Advocate, Gotra: Malik, Deshwal, Sheoran, Cont.: 9417333298
- SM4 Jat Girl (01.01.1990) 5'3" M.A. Pol.Sc. JBT, HTET, CTET, Net Trainer, Gotra: Beniwal, Bangar, Dhanda, Cont.: 8010277736
- SM4 Jat Girl (03.02.1992) 5'6" B.Tech., Working Analyst at Royal Bank Gurugram, Gotra: Dalal, Malik, Narwal, Cont.: 9810319840
- SM4 Jat Girl (05.02.1989) 5'2" Ph.D., working Physics Assistant Professor, CHD, Gotra: Kaliraman, Dahiya, (Direct Malik), Cont.: 9988336791
- SM4 Jat Girl (03.01.1992) 5'2" M.Sc. Ph.D. NET, Govt. Junior Lecturer, Panipat, Gotra: Khubber, Nain, Sangroya, Cont.: 9466218455
- SM4 Jat Girl (24.02.1991) 5'4" MCA, Gotra: Chahal, Khubber, Gulia (Direct Malik), Cont.: 9992500984
- SM4 Jat Girl (11.12.1991) 5'3" B.Tech. B.ed, working as Teacher in DPS, Gotra: Rangi, Dhanda, Sheokand, Cont.: 9812539001
- SM4 Jat Girl (15.08.1990) 5'2", B.Com. MBA, B.Ed. working Assistant in Axis Bank, Gotra: Rangi, Dhanda, Sheokand, Cont.: 9812539001

दुनिया का अस्तित्व शस्त्र बल पर नहीं, सत्य, दया और आत्मबल पर है। –महात्मा गांधी

- SM4 Jat Girl (17.02.1987) 5'2" BAMS, PG-ENT, MS, Gotra: Nain, Malik, Jaglan, Mor, Cont.: 7876122900
- SM4 Jat Girl (12.10.1992) 5'3' B.Tech., working Service in Ltd. Company, Gotra: Naidoo, Nain, Khatkar, Cont.: 9217126815
- SM4 Jat Girl (27.10.1993) 5'8" M.A., ENG. NET, working DEO, Education, Gotra: Malik, Sangwan, Dahiya, Cont.: 9217884178
- SM4 Jat Girl (23.10.1992) 5'2" B.Tech (Fashion) working Designer in Desa Brand, Gotra: Rajyan, Nandal, Jakhar, Cont.: 9255525278
- SM4 Jat Girl (11.07.1990) 5'3" M.Com. B.Ed., NET HTET AWE, PGT Regular Army Public School, Gotra: Dagshai, Solan, Sihag, Dhatarwal, Dhanda, Cont.: 9478355792
- SM4 Jat Girl (08.01.1990) 5'2' MA Pshycology, working DEO, Gotra: Punia, tewatia, Nobar, Cont.: 8950717580
- SM4 Jat Girl (03.01.1994) 5'3" M.Sc. Physics, Bed. CTET, PTET, Gotra: Mor, Pannu, Malik, (Poonia, Kataria, Nehra, Grewal) Cont.: 9417725528
- SM4 Jat Girl (29.02.1992) 5'4" M.Sc. Physics, B.ed. PTET, Gotra: Dalal, Dagar, Sinhmar, Sindhu, Cont.: 9463330394
- SM4 Jat Girl (15.12.1993) 5'4" M.Sc. Physics, B.Ed CTER, HTET, Private Teacher in Heritage School, Gurugram (Package 5.5 lakh) Gotra: Gulia, Ahlawat, Dabas, Cont.: 9417416977
- SM4 Jat Girl (20.08.1993) 5'6" MA English, working Steno Typist Contract, Haryana Govt., Gotra: Nijarnia, Saharan, Jayani, Cont.: 9463889289
- SM4 Jat Girl (20.08.1992) 5'2" M A, B.Ed., Contract Teacher, Gotra: Nijarnia, Saharan, Jayani, Cont.: 9463889289
- SM4 Jat Girl (02.10.1990) 5'4" M.Pharma, working Pharma Compnay, Baddi, Gotra: Bankura, Dhillon, Antal, Cont.: 9416460624
- SM4 Jat Girl (22.01.1994) 5'1" M.Tech, Gotra: Chhikara, Godara, Nandal (Dhankhar) Cont.: 9434032850
- SM4 Jat Girl (22.02.1991) 5'7" M.Sc. Geography, B.Ed. Gotra: Dalal, Nain, Sheoran (Maan, Deshwal, Sihag), Cont.: 9466752616
- SM4 Jat Girl (07.07.1991) 5'5" BDS, Private Hospital, Bhiwani, Gotra: Phogat, Sahu, Sheoran, Solanki, Cont.: 9416939701
- SM4 Jat Girl (13.06.1993) 5'5" B.Tech, Working in HCL, Gotra: Phogat, Sahu, Sheoran, Solanki, Cont.: 9416939701
- SM4 Jat Girl (24.07.1989) 5'5" B.Com. (Hons), Company Secretary, PGDBA, Masters in Business Law Company Secretary in JCBL (April 2014-June 2018), Working with C.A. Firm, Gotra: Garhwal, Jakhar, Ola, Cont.: 9464741686
- SM4 Jat Girl (14.12.1991) 5'4" M.Sc. Chemistry, B.Ed. Assistant Professor (Contract) Jat College, Gotra: Dhankhar, Saraha, Kadiyan, Cont.: 9466649110, 7888653335
- SM4 Jat Girl (29.09.1991) 5'3" BDS, Pursuing MDS, Gotra: Chhikara, Vijaran, Dagar, Cont.: 9416056222
- SM4 Jat Girl (23.03.1991) 5'3" M.Tech. Pursuing Ph.D. NIT KUK, Gotra: Dhillon, Dhanda, Panghal (Nehra, Dult) Cont.: 8506078700
- SM4 Jat Girl (30.03.1995) 5'1" M.A. Economic PU, B.Ed, Gotra: Sirohi, Dodwal, Cont.: 9870705700
- SM4 Jat Girl (4.6.1993) 5"4', MA Eng, Fashion Designer Diploma, Pvt Business. Gotra: Nehra, Narwal, Rathee, Dhuan, Cont.: 9417046305
- SM4 Jat Girl (19.9.1990) 5'6" B.Tech, MBA, Project Engg. Gotra: Dabas, khatri, Cont.: 9818579670
- SM4 Jat Girl (22.02.1991) 5'7" BA,B.Ed, MSC (Geography) Gotra: Dalal, Nain, Sheoran, Cont.: 9466752616
- SM4 Jat Girl (10.7.1986) 5'3" MA English B.Ed, Teacher Posted Panipat, Gotra: Sheokand, Benwal, Nandal, Cont.: 9729759980
- SM4 Jat Girl (03.06.1976) 5'1" BA & MBA, Service in Gurugram, Gora: Kushal, Kathwalia, Cont.: 9855403488
- SM4 Jat Girl (15.4.1993) 5'3" B.A doing B.Ed CTET and HTET, Gotra: Phangal, Dahiya, Sandhu, Rathee, Cont.: 9991185868
- SM4 Jat Girl (4.10.1996) 5'2" M.Sc food science, Gotra: Nehra, Narwal, Dhuan, Rathee, Cont.: 9417046305
- SM4 Jat Girl (23.7.1988) 5'3" BDS, Gotra: Chahar Nain Binda, Cont.: 7347378494
- SM4 Jat Girl (Dec-88) 5'2" M.A. Economics (Hons). Gotra: Dahiya, Sehrawat, Cont.: 9988224040
- SM4 Jat Girl (15.05.1992) 5'5" M.Sc. Chemistry, B.Ed, working Private Teacher, Gotra: Mor, Dhariwal, Chahal (Poonia, Malik, Kataria, Nehra, Grewal) Cont.: 9416603097
- SM4 Jat Girl (03.01.1995) 5'3" BDS, Practice, Gotra: Gill, Sehrawat, Ahlawat, Cont.: 9466205869
- SM4 Jat Girl (03.03.1996) 5'7" M.A Double, Gotra: Gahlawat, Mann, Sangwan, Lamba, Cont.: 9466016393
- SM4 Jat Girl (03.04.1990) 5'4" ECE B.Tech. MBA, Property Developer and Builder, Gotra: Chahar, Nain, Binda, Cont.: 7347378494
- SM4 Jat Girl (08.12.1994) 5'4" JBT, B.Com, HTECT, CTECT, Gotra: Panghal,Sihag, Kalkanda, Cont.: 9466580807
- SM4 Jat Girl (09.10.1992) 5'4" BBA, M.Com, Gotra: Panghal,Sihag, Kalkanda, Cont.: 9466580807
- SM4 Jat Girl (08.08.1991) 5'6" M.Com, Gotra: Malik, Kaliraman, Saharat, Cont.: 9417187284
- SM4 Jat Girl (13.05.1984) 5'3" M.A, Hindi, Govt. Job. Steno, Gotra: Gadodia, Lamba, Sangwan, Cont.: 9417554756
- SM4 Jat Girl (03.10.92) 5'6" M.Sc Physics from P.U. B.Ed, CTET, HTET cleared, Gotra: Gehlayan, Chhikara, Bura, Khatkar, Cont.: 9467630182
- SM4 Jat Girl (Apr-89) 5'4" MCA from PU, Employed in Pb. & Hr. High Court, Gotra: Sheoran, Punia, Sangwan, Cont.: 9988359360
- SM4 Jat Girl (23.07.1990) 5'5" B.Tech., MS from USA, Working in USA, Gotra: Sandhu, Gehlawat, Malik, Deswal, Cont.: 9416160789
- Suitable match for Jat Girl (DOB 29.12.92) 25.11/5'3" B.A Working as Teacher in private institute. Avoid Gotras: Punia, Saral, Ghanghas. Cont: 9888685061
- Suitable match for Jat Girl (DOB 31.07.92) 26/5'3" M.Sc Botny from P.U. JRF qualified, Doing PhD from MDU Working as Teacher in private institute. Avoid Gotras: Lathwal, Narwal, Sanswal. Cont: 9416918898
- SM4 Jat Girl (18.08.91) 27/5'4" B.Tech, Diploma in Electrical & Communication from M.D.U. Avoid gotras: Pawaria, Nandal, Ahlawat. Cont: 9811658557

LIST OF JAT BOYS

- SM4 Jat Boy (20.08.1982) 5'9.5" LLM (Criminal Law) LLB (2016) P.U. Master in International Bussiness 2006. University of Greenwich in U.K., Fincial Management Global Strategy & International Marketing. B.A. 2002 in P.U., Relationship Manager HSBC (Dec.-Nov. 2011), Relationship Manager in Braclays Bank (July 2010-Nov. 2010) Assistance Sale Manager in Citi Bank (2008-June 2010) Working in Desbhaghat University as Associate Professor. Gotra: Malik, Punia, Mor, Cont.: 0172-2641127, 9888004417
- SM4 Jat Boy (02.09.1985) 5'8" B.D.S, Self Clinic, Gotra: Deshwal, Dahiya, Mor,, Cont.: 9868092590
- SM4 Jat Boy (27.01.1994) 5'1" M.com Punjab University, working Accountant in HAFED on out sourcing policy, Gotra: Dhaiya, Gill chillar other Chikkara, Cont.: 9812503542
- SM4 Jat Boy (18.12.1994) 5'1" 10+2, N.A, Gotra: Ahalwat, Dhuan, Shuhag other Gulia, Cont.: 8816998315
- SM4 Jat Boy (Aug-89) 5'6" Gardaute N.A, Gotra: Malik, Tawar, pawar, Cont.: 9216777716
- SM4 Jat Boy (16.9.1991) 5'7" M.CA(CS) working Software Engg. (package 4.80) Gotra: Sherawat, Attri, Cont.: 9634363379
- SM4 Jat Boy (08.4.1990) 5'7" PG. D.M (finance) B.Com, working Team Leader Assistant Manager (Accenture Solution Ltd Package 5.50), Gotra: Jaglana, Dahiya, Saroha, Cont.: 9540839373
- SM4 Jat Boy (07.08.1993) 5'8" BVSC and AH, working in Pvt Job.

हम हमेशा कठिनाई के स्थान पर आसानी की ओर आकृष्ट होते हैं। जबकि कठिनाई से वही निपट लेना श्रेष्ठ होता है। –अज्ञात

Gotra: Ghalyan, Malik, Bura, Cont.: 8053302264

- SM4 Jat Boy (07.08.1988) 5'1" working in Bachelor in Hotel Management, Captian in (Hotel (Abu Dhabi) Package 8 Lac, Gotra: Punia, Chatthe, Cont.: 9719155600
- SM4 Jat Boy (08.05.1975) 5'9" 10+2, N.A, Gotra: Khatakar, Narwal, goyat, Cont.: 9466778535
- SM4 Jat Boy (20.09.1993) 6' M.Tech, Lecturer, Gotra: Guttian, Khatakar, Cont.: 9416028926
- SM4 Jat Boy (28 Years) 10+2, ITI, Working beyond package 30,000/- Per month, Gotra: Lakhlan, Godra, benewal, Cont.: 8295121819
- SM4 Jat Boy (16.03.1984) 5'3" B.A/B.Ed, Physical Edu teacher, in Private school, Gotra: Tomar, Sangwan, Phogat, Cont.: 8929622456
- SM4 Jat Boy (5.10.1981) 5'7" B.A, Tour & Travel income 60,000/- per month, Gotra: Rathee, Chahal, Hooda, Cont.: 9254822209
- SM4 Jat Boy (21.10.1988) 5'11" Computer Engg. (BE from Jaipur, M.Sc Bostan USA) Computer Engg in Bostan (USA), Gotra: Sangwan, sindhu, Sehoran, Cont.: 9416059988
- SM4 Jat Boy (23.02.1990) 5'5" B.tech Package 10 lac, Gotra: Sindhu, Sirohi
- SM4 Jat Boy (01.06.1990) 5'9" B.Tech, M.Tech, NFL, Bhatinda, Package 7 lac, Gotra: Deshwal, Thanua, Cont.: 9968377670
- SM4 Jat Boy (13.05.1983) 5'6" 10+2 Supervisor, Gotra: Narwal, Khokar, Phogat other Dhull, Cont.: 9991604013
- SM4 Jat Boy (28.10.1991) 5'9" Constable UP Police, Gotra: Nahra, Sangwan, Cont.: 9927384808
- SM4 Jat Boy (5.9.1986) 5'7" B.Tech Bio Medical , M.tech (USA) Self Business, Gotra: Bawariya, Meel, Shiag, Cont.: 9416397613
- SM4 Jat Boy (172 cm) B.sc/B.Ed CCY, Spl BTC, Govt.Teacher (42000 per month), Gotra: Rathee Balyan, Cont.: 9557581553
- SM4 Jat Boy (2.05.1992) 5'11" B.A/B.Ed, C,Tet, P,Tet, Under coaching in CHD, Gotra: Kundu, Dahiya Dalal, Cont.: 9888120102
- SM4 Jat Boy (28.5.1986) 6' B.Tech Electrical, working Pvt Job, Gotra: Dahiya, Kundu Singmar, Deshwal, Cont.: 9466449843
- SM4 Jat Boy (26.06.1991) 5'9" B.Tech civil MDU RTK, Self Business (income 6 lac), Gotra: Nandal, Jakhar, Rajyan, Cont.: 9255525278
- SM4 Jat Boy (15.03.1991) 5'9" B.Tech (CS) MBA, working Software Engg. In Mohali, Gotra: Nain, Bheru, Mor, Cont.: 9996606868
- SM4 Jat Boy (06.02.1991) 5'7" B.Tech (Mechnical) SBI Tomar, Tewatiya, Malik, Cont.: 9466262234
- SM4 Jat Boy (03.04.1992) 5'9" B.Tech (ECE) working Central Excise Insp. Mumbai Gotra: Rhula, Narwal, Kharata, Cont.: 9466563733
- SM4 Jat Boy (18.06.1989) 5'11" B.Tech. Working in Wipro, Gotra: Kairon, Dhanda, Malik, Cont.: 9813322522
- SM4 Jat Boy (20.07.1992) 5'9" MBA, Finance and Retailer, AG Office HRy DEO, Gotra: Mann, Shuhag, Deshwal, Dalal, Ghlawat, Sangwan, Cont.: 8708472800
- SM4 Jat Boy (18.8.1990) 5'8" B.A, working Bhavik Pvt Ltd Kashwana (Rjs), Gotra: Lamba, Midhar, Jitarwal, Cont.: 9001712090
- SM4 Jat Boy (23.2.1989) B.tech, working ACB Ltd Rajagarh, Gotra: Khara, Sangwan, Deshwal, Cont.: 9416934364
- SM4 Jat Boy (10.6.1989) 5'6" 10th pass, working in Pvt Job, Gotra: Bhar, Dhillon, karwarsara, Cont.: 9812065919
- SM4 Jat Boy (12.10.1990) 5'11" B.A JBT HTET pass, working in Vita Booth, Gotra: Deshwal, Kadiyan, Malik, Cont.: 9992446838
- SM4 Jat Boy (11.8.1990) 5'9" B.tech, working Delhi Creative Group, Gotra: Nashpal, Kaysath, Gotra: 9876024577
- SM4 Jat Boy (3.3.1991) 5'11" B.tech (MC) P.O, IDBI, Gotra: Thelan, Kataria, Kohar, Deshwal, Cont.: 9885506631
- SM4 Jat Boy (17.9.1989) 5'8" B.tech (Elc), working in Project Officer HREDA, Gotra: Mohil, Karwarsara, Bohriya, Lamba, Cont.: 9417250704
- SM4 Jat Boy (10.4.1983) 5'7" BA, JBT, Yoga Teacher, Gotra: Sindhu, Malik Dharwal, Gotra: 8901540222
- SM4 Jat Boy (7.9.1990) 6' B.tech in civil engg., working Custom Officer, Gotra: Poria, Rathee, Singdora, Cont.: 9417069129
- SM4 Jat Boy (10.8.1995) 5'8" 10+2, working Constable UT CHD, Gotra: Mann, Malik ,Sharan, Cont.: 9317958900
- SM4 Jat Boy (8.9.1980) 6'2" 10th, Gotra: Pawar, chahal, Ghangash, Rathee, ahlawat, Cont.: 9317958900
- SM4 Jat Boy (7.8.1992) 5'11" B.Tech, working in Asstt. Manager M&M Sawraj Mohali, Gotra: Rathee, Nain, Malik, Cont.: 9215763372
- SM4 Jat Boy (12.12.1990) 5'9" B.Tech, Working in Maruti Service Center, Gotra: Grewal, Gill, Ahlawat, Cont.: 9316136802
- SM4 Jat Boy (28.11.1989) 6' B.Tech (ECE), working MNC IT Park Chd, Gotra: Malik, Pehal, Nain, chahal, Cont.: 8054461730
- SM4 Jat Boy (6.4.1990) 6' B.Tech (cs), Job in CISF Sub Insp., Gotra: Phogat, Dahaiya, Sheoran (Rathee), Cont.: 7696551999
- SM4 Jat Boy (7.9.1990) 6' B.Tech (in civil), Job in Custom Officer Custom Deptt., Gotra: Poria, Rathee, Singroha (Dhuan,Deshwal, Chahal), Cont.: 9417069129
- SM4 Jat Boy (1.10.1988) 5'6" 10+2, Pvt Job, Gotra: Narwal, Bangar, Chahar, Cont.: 981583427
- SM4 Jat Boy (12.6.1990) 5'11" B.tech, M.tech (Malboran) System Engg. CUBE Co. Malboran, Gotra: Dhull, Kandola, Sheokand, Chahal, Cont.: 9416785631
- SM4 Jat Boy (25.01.1989) 5'10" NDA Major in Army, Gotra: Chhikara, Kohad, Vijaran, Cont.: 9811154643
- SM4 Jat Boy (08.11.1991) 6' B.A., Self Business, Gotra: Pahal, Malik, Sehrawat, Cont.: 9988407607
- SM4 Jat Boy (25.4.1992) 6'2" B.SC, T.V Artist, Gotra: Dhull, Sangwan, Malik, Cont.: 9466580807
- SM4 Jat Boy (Aug-94) 6'2" B.A. Gotra: Sindhu, Tehlan, Malik, Gehlawat, Cont.: 9872716234
- SM4 Jat Boy (21.08.1987) 5'10" B.Tech, working Software eng. USA, Gotra: Sindhu,Chhilar,Ahlawat, Galawat, Cont.: 9315647254
- SM4 Jat Boy (25.04.1989) 5"11" M.Tech, Job in SDO, Local Govt.Punjab, Gotra: Ahlawat, Malik, Siwach, (Rathi), Cont.: 8146834770
- SM4 Jat Boy (22.12.1981) 5'9" BA, ITI, Business, Gotra: Gadodiya, Lamba, Sangwan, Cont.: 9417554756
- SM4 Jat Boy (16.06.1988) 6"1, M.Com, Business, Gotra: Gadodiya, Lamba, Sangwan, Cont.: 9417554756
- SM4 Jat Boy (03.01.1988) 5'8" MBBS MD, Gotra: Goyt, Ahlawt, Dhankher, Cont.: 9812596313
- SM4 Jat Boy (03.06.91) 5'5" Mechanical Engineer, Gotra: Dhillon, Kalkanda, Sheokand, Cont.: 8901152385
- SM4 Jat Boy (03.06.90) 5'7" B.Tech, MBA, Self Employed, Gotra: Nain, Malik, Cont.: 9876633101
- SM4 Jat Boy (DOB 13.11.88) 30/5'10" Chartered Accountant (CA), M. Com (F & T), B. Com (Accounts & Hons.) UGC, NET qualified Working as Assistant Manager in Bank of Amrica with package Rs. 16 lakh PA. Avoid Gotras: Dalal, Duhan, Nehra. Cont: 9256612897
- SM4 Jat Boy (DOB 3.10.90) 28/6' B.Tech Employed as Auditor in Audit & Accounts Department (C & AG of India). Avoid Gotras: Dhankhar, Suhag, Sangwan. Cont: 8219949508Suitable match for Jat Boy (DOB 28.12.92) 27/5'8" B.Tech Own business. Earning Rs. 1.5 lakh per month. Avoid Gotras: Dahiya, Kajla, Ahlawat. Cont: 9463881657
- SM4 Jat Boy (DOB 7.11.93) 25/5'10" B.Tech (Electrical & Communication) Doing government job in Chandigarh. Father in Chandigarh Police. Avoid Gotras: Phogat, Dahiya, Gandas. Cont: 9417351380, 7888303417
- SM4 Jat boy DOB (25.08.88) 30/5'7" CTET, HTET cleared B.Ed Hindi 7 social science. Employed on contract in Delhi school. Mother in government job. Father expired. Avoid gotras: Malik, Panghal. Cont: 9811658557, 8901512510

कलियुग में रहना है या सतयुग में यह तुम स्वयं चुनो। तुम्हारा युग तुम्हारे पास है। –विनोबा भावे

रोहतक की नीली कोठी बनाम छोटूराम भवन

रणबीर सिंह

यदि सेठ शिरोमणि छाजूराम लाम्बा ना होते चौं छोटूराम भी एक महान नेता न होते। चौ. छोटूराम उन्हें धर्मपिता कहकर पुकारते थे। चौधरी छाजूराम ने चौ. छोटूराम को रहने के लिए और सुचारु रुप से अपना काम करने के लिए रोहतक में एक विशाल भवन का निर्माण किया था उस समय इसकी कीमत लगभग 30हजार रुपये थी जो आगे चलकर नीली कोठी के नाम से प्रसिद्ध हुई। यह कोठी आज भी अपने उसी स्वरुप में रोहतक शहर के बीचों बीच खड़ी है।

पंडित सेढुमल शर्मा जो चौ. छाजूराम के आजीवन मुंशी रहे, के हवाले से जानने को मिलता है कि इस कोठी की 30 हजार रुपये की कीमत चौ. छोटूराम द्वारा लौटानी थी लेकिन वे जीवन भर नहीं लौटा पाए। जब एक बार पंडित सेढुमल शर्मा किसी कार्यवश रोहतक में चौ. छौटूराम से मिलने गए तो उस समय वे पंजाब प्रांत के गृहमंत्री थे। लेकिन उन्होंने मंत्री जी को लस्सी व प्याज के साथ सब्जी –रोटी खाते देखा। उस वक्त उन्होंने पंडित जी से कहा–कैसे लौटाउ पैसे मेरे हाथ बहुत तंग हैं। मैं बाबू जी के पैसे नहीं दे पाया। मुझे इस बात की बहुत शर्म हैं। बाबू जी के मुझ पर बहुत एहसान हैं।'' तब पंडित सेढूमल ने कलकता पहुँचने पर चौ. छाजूराम को बताया था–लोग न जाने क्या–क्या कहते हैं।''

मेरा मानना है कि मंत्री बनने के बाद व्यक्ति बहुत अमीर हो जाता है। लेकिन मैं तो एक मंत्री को प्याज व लस्सी के साथ रोटी खाते देखकर आया हूं। मैंने वंहा सब पता लगाया कि मंत्री जी का पैसा कहां जाता हैं? पता चला कि वे ईमानदारी से केवल अपना वेतन लेते हैं और उसका भी ज्यादातर हिस्सा जरुरतमंदों पर खर्च कर देते हैं। आप सुन कर हैरान होंगे, उनका हाथ इन दिनों तंग चल रहा है। कह रहे थे कि बाबू जी के पैसे नहीं दे पा रहा, इसलिए शर्मिंदा हूं। यह सब जानकर सेठ छाजूराम भावुक हो गए। उन्होंने कहा, ''मुझे छोटूराम पर गर्व है। वह खरा हीरा हैं। ईमानदार लोग ऐसे ही तो हुआ करते हैं। उस पर ऐसी हजार कोठियाँ कुर्बान।''

मैंने पंडित शर्मा को समझाया था कि पिता–पुत्र में हिसाब–किताब नही हुआ करते। वह कोठी मैंने बनावाई ही उसके लिए हैं। उससे पैसे मांग ही कौन रहा है? छोटूराम बेकार में चिंता किए जा रहा है। उन दिनों यही कोठी रोहतक में शक्ति का केंद्र बन चुकी थी। उस समय रोहतक की यह नीली कोठी दिल्ली के बिड़ला भवन तथा अहमदाबाद के शाबरमती आश्रम के समान महत्व प्राप्त कर चुकी थी। कहते हैं कि चौ. छाजूराम ने चौ. छोटूराम के लिए वर्ष 1939में लाहौर में भी 70 हजार की लागत से एक कोठी बनवाई थी जिसे आज भी 'शक्ति भवन ' नाम से जाना जाता था।

गौरव दहिया को दो करोड़ का पैकेज

जाट कौम में प्रतिभा व कौशल की कमी नहीं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा द्वारा हमारा वर्ग ऊंचाइयां हासिल कर रहा है। गौरव दहिया इस का अनोखा उदाहरण है। चंडीगढ़ के युवा इंजीनियर को दुनिया की **'टॉप सोशल नेटवर्क कंपनी फेसबुक'** ने दो करोड़ का पैकेज दिया है।

चंडीगढ़ के सेक्टर–15 स्थित डीएवी सीनियर सेकेंडरी स्कूल से 12वीं करने के बाद गौरव दहिया ने एनआईटी दिल्ली से बैलचर ऑफ इंजीनियरिंग (बीटेक) की डिग्री पूरी की। बीटेक के बाद ही उन्हें कई कंपनियों से अच्छे आफर मिलने लगे। 26 लाख पैकेज पर उसने एक आइ टी कंपनी ज्वाइन कर ली। उसके बाद वह कंप्यूटर फील्ड में हायर स्टडी करने के लिए अमेरिका चले गए और वहां की स्टोनी ब्रुक यूनिवर्सिटी से मास्टर इन कंप्यूटर साइंस की डिग्री हासिल की। अब उन्हें वहां पर दो करोड़ से अधिक का पैकेज मिला है। बेटे की इस उपलब्धि पर डॉ. सुरेन्द्र सिंह दहिया सहित पूरा परिवार काफी खुश हैं। डॉ. दहिया चंडीगढ़ के सेक्टर–32 स्थित स्टेट काउसिंल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग (एससीईआरटी) में डायरेक्टर के पद पर कार्यरत हैं। उनका परिवार मूलरूप से हरियाणा स्थित सोनीपत के रोहणा गांव से है। जाट सभा के समस्त सदस्य गण उनकी इस शानदार उपलब्धि पर हार्दिक मुबारक देकर उनके उज्जवल व मगलमंय भविष्य की कामना करते है।

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)

सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417

श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़

फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127

Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172-2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।